सदीनामा

सोच में इजाफे की पत्रिका www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-18 ❑ अंक - 9 ❑ 1 से 31 जुलाई, 2018 ❑ पृष्ठ- 28 ★ RNI No. WBHIN/2000/1974 ❑ मूल्य - 10.00

इस माह की पेंटिग

सम्पादकीय

सांस्कृतिक समरसता, सामाजिकता और भाषाई ताना बाना

अविभाजित भारतवर्ष में सामाजिक सांस्कृतिक समरसता को भाषाई ताने बाने पर एक नजर डालते ही उन मनिवियों के आगे नतमस्तक होने का मन करता है जिन्होंने हमें बचाए-बनाए रखा, समृद्ध किया और परम्पराएँ हमें छोड़ी। अब कबीर के साथ आज के संदर्भ में डॉ॰ पुरषोत्तम अग्रवाल की पुस्तक ''अकथ कहानी प्रेम की'' हो या डॉ॰ धर्मवीर की पुस्तक ''खसम खुशी क्यों होय'' दोनों के बीच से बिना कबीरपंथी हुए कबीर की रचनाओं की पैठ, उसका असर सदियों से अनुभव किये जा रहे हैं। सबद प्रभावी हैं। कबीर की वाणियों की भाषा के साथ कथ्य के नजदीक हमें मिले लालन फकीर। लालन फकीर पर हिन्दी में बहुत कम काम है पर जिन लोगों ने काम किया है उसमें बातचीत से जो लगा वो है कि लालन के गीत जिनको 'बाउल गीत' भी कहते है में कबीर की विचारधारा साफ साफ नजर आती है। अविभाजित भारत के बंगाल प्रान्त के छेउड़िया गांव के अखाड़े में लालन ने शाब्दिक क्रान्ति की। उन पर लिखित फतवा पारित किया कट्टर पंथियों ने ''लालन लिखते हैं। 'लालन को सब कहते हैं कि जाति क्या है''

लालन कहते हैं जाति का क्या रूप है इस संसार में।'
सुन्नत कहते हो मुसलमान नारी का तब क्या विधान।
ब्राह्मण पहचानू जनेऊ प्रमाण, ब्राह्मणी पहचानूँ क्या प्रमाण।

लालन ने जो लिखा खुलकर लिखा। बांग्ला भाषा के बाद के बड़े कवियों पर उनका प्रभाव बहुत ज्यादा है, जैसे रवीन्द्र नाथ की रचनाओं पर। नजरूल की रचनाओं पर गाँव-गाँव, रात-रात भर गीत गाने वालों में शामिल 'बाउल गीतों' के साथ जनमानस पर।

भारतवर्ष की सभी भाषाओं में लालन और कबीर हैं, सामाजिक, सांस्कृतिक ताने बाने की उपस्थिति है। सम्पादकीय पढ़ते समय आपका किसी भी भाषा के ऐसे साधक हो तो हमें लिख भेजें। यह सत्य है कि विचारधारा का अन्तिम रूप धर्म में बदल जाना है। सिख पंथ का धर्म में बदलना गुरुग्रंथ साहिब में कबीर के साथ छ सौ संतों की वाणियों का होना या बंगाल के मतुआ सम्प्रदाय का मतुआ धर्म में बदलाव ऐसी है सांस्कृतिक धार्मिक क्रान्तियाँ हैं। यही भारतवर्ष का ताना बाना है जो हमारे पुरुखों ने बुना है।

हर नये युग में भाषाओं में रचनाएँ आती हैं। अलग-अलग माध्यमों में जैसे बांग्ला कथाकार सुनील गंगोपाध्याय ने लालन की आत्मकथा लिखी हैं, वही बांग्ला फिल्मकार गौतम घोष ने उन पर 'मोनेर मानुष' फिल्म बनाई है। बांग्ला में रवीन्द्रनाथ ने कबीर का अनुवाद किया। लालन फकीर के कुटिया आश्रम के पास वे बाइस वर्ष तक जमींदारी कामों के सिलसिले में रहें। उनके पास के पोस्टआफिस के पोस्टमैन गगन हरकारा के गीतों को उन्होंने रोज सुना। रवीन्द्रनाथ की रचनाओं पर कबीर और लालन दोनों को उन्होंने रोज सुना। रवीन्द्र नाथ की रचनाओं पर कबीर और लालन दोनों की रचनाओं का गहरा प्रभाव है। बांग्लादेश की आम लोग उनके लालन का शिष्य समझते हैं। यही एक बात है जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को सांस्कृतिक रूप से मजबूत करती हैं।

जितेन्द्र जितांशु

सम्पादक मण्डल

उप-संपादक : तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य
संपादकीय सलाहकार : यदुनाथ सेउटा
संपादक : जितेन्द्र जितांशु

संरक्षक मंडल

आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी
राजेन्द्र कुमार रूईया (अमेरिका)
तथा शिवेन्द्र मिश्र
सभी अवैतनिक हैं।

❑ कविता ❑

शक्तिमान की जन्मभूमि

मुझे लगता है इस कविता को ठीक से समझने के लिए जबलपुर प्रत्यक्ष देखने का अनुभव आवश्यक है। 'शक्तिमान' ट्रक की फैक्ट्री और मिलिट्री एरिया तो अन्यत्र भी मिल जाएंगे, लेकिन जबलपुर में काले पत्थरों की जो एक अजीबों गरीब अवस्थिति है वह पारम्परिक सौन्दर्यशास्त्र के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होना चाहिए, और उससे परिदृश्य में जो अविश्वसनीय कौतुहल पैदा होता है वह जबलपुर जाए बिना शायद ही समझ में आए। यह कविता अमरदीप ने हमें यह कहते हुए भेजी कि आज जबलपुर जाते रहते हैं, अत: आप इस कविता को जरूर पढ़ें, सभी पढ़े, इसलिए अपने पाठकों के लिए-सम्पादक

अमरदीप -9830847510, सम्प्रति : गुवाहाटी, असम में कार्यरत

गठीली बॉडीवाले
मिलिट्री के ट्रकों का काफिला
गुजर रहा था इधर की सड़क से,
ट्रक-एकदम नये नवेले-
जैसे दिखाई पड़ते हैं राजपथ पर
गणतंत्र दिवस के दिन!

अनायास ही याद आ गया जबलपुर-
जहाँ की फैक्टरी में
तैयार होते हैं ये मशीनी महाकाय-
और जाते हैं भारत भर के
दुर्गम दुर्गम कौरों-करारों तक!
इन्हीं को देखकर कौंध गया एकदम
यादों की आँखों में - जबलपुर
और उसके बड़े - बड़े जब्बल-
यानी पत्थर-
यकीनन आपको काले पत्थरों का
वहाँ-सा अनोखा संग्रहालय शायद ही
दुनिया में कहीं देखने को मिले-
एक भरा-पूरा, साक्षात लोकतंत्र-
हाँ भाई, पत्थरों का बना हुआ,
गढ़ा हुआ - एक लोकतंत्र!-
जिसे हाड़-मांस का इंसान
अब तक बनाने के सपने देखता है।
पत्थरों ने कब का बना लिया,
आज से लाख-लाख बरस पहले,
आग्रेय युग में, और नमूना-
आज के इंसानों के सामने हैं!
जिस पत्थर को जहाँ जगह मिली-
जम गया है, और सम्मानित है
अपनी जगह पर - बल्कि
सम्मान-अपमान जैसी बात ही नहीं है।
पत्थरों की इस बेतरतीबी ने ही तो
अलौकिक सौंदर्य से भर रखा है
मेरे बचपन के शहर जबलपुर को!
मानो मेघवर्ण गदाधर भीम को देखकर
श्रृंगार किया हो उत्फुल्ल हिडिम्बा ने।

मेरे जबलपुर की ओस भींगी सड़कों पर
आज भी दौड़ते होंगे, तीन-चार कतारों में
खुली छाती वाले फौज के जवान!
जैसा हम देखा करते थे उन्हें
सोई आँखें मलते हुए खिड़की से, और
गर्व करते कि देश जाग रहा है!
उसका सैनिक दैनिक अभ्यास के लिए
उसकी सड़कों पर भाग रहा है।

कभी कभी चट्टानों के पीछे से आती थीं,
फायरिंग की गरजती आवाज
मिलिट्री इलाकों के मैदानों से-
जहाँ एक पत्ता भी आवारा-सा
नहीं पड़ा हो सकता ज़मीन पर!
कत्थई-सफेद पुते होते थे
न केवल हर दरो-दीवार, बल्कि
क्यारियाँ बाँधती ईंटों की पंक्तियाँ भी
गश्त दे रहीं होती थीं उन पर!
एक दूसरी ही दुनिया मिलिट्री कपाउंड की
-चप्पा चप्पा अनुशासन से गमकता हुआ,
इंसानी मेहनत की रो मैं टटकता हुआ...

मिलिट्री फैक्ट्री के लोहे में
ढले हुए वे मेरे गहरे हरे ट्रक।
शायद वे मेरी भावनाएँ समझ सकें-
जब मैं कहूँ - कि भले दूसरे लोग उन्हें
बस भारवाही वाहन देखें
–मैंने उन्हें देखा है-
अदम्य 'शक्तिमान' को चरितार्थ करते हुए,
सड़कों पर अभय शौर्य-सा भरते हुए

❑ चर्चा में ❑

क्या चर्च, मोदी सरकार को अस्थिर करने का प्रयास कर रहा है?

-राम पुनियानी
ram.puniyani@gmail.com

विहिप के प्रवक्ता सुरेन्द्र जैन ने गत 7 जून को कहा कि भारत का चर्च, मोदी सरकार को अस्थिर करने का प्रयास कर रहा है। उनका यह बयान, गोवा और दिल्ली के आर्चबिशपों के वक्तव्यों की पृष्ठभूमि में आया। दिल्ली के आर्चबिशप अनिल काउडू ने 8 मई, 2018 को दिल्ली आर्चडाइसिस के अंतर्गत आने वाले पेरिश पादरियों को लिखे एक पत्र में उनसे यह अनुरोध किया कि वे 'हमारे देश' के लिए प्रार्थना करें। पत्र की शुरुआत इस टिप्पणी से होती है कि, 'हम इन दिनों देश में एक अशांत राजनैतिक वातावरण देख रहे हैं, जो हमारे संविधान में निहित प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों और देश के धर्मनिरपेक्ष तानेबाने के लिए खतरा है।' पत्र में दिल्ली के 138 पेरिश पादरियों और पांच अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रमुखों से यह अनुरोध किया गया है कि वे ' हर शुक्रवार को उपवास खाकर इस स्थिति के लिए प्रायश्चित करें और अपने और देश के आध्यात्मिक नवीकरण के लिए त्याग और प्रार्थना करें। गोवा और दमन के आर्चबिशप फिलिपी नेरी फेरो ने कहा कि देश में मानवाधिकारों पर हमला हो रहा है और संविधान खतरे में है, और यही कारण है कि अधिकांश लोग असुरक्षा के भाव में जी रहे हैं। अपने वार्षिक पेस्टोरल पत्र में उन्होंने 'पादरियों, धर्मनिष्ठ लोगों, आम नागरिकों और सद्इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को संबोधित करते हुए कैथोलिक धर्म के मानने वालों से यह अनुरोध किया कि वे 'राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभायें' और 'चापलूसी की राजनीति से तौबा करें'। उन्होंने लिखा, 'चूंकि आम चुनाव नजदीक आ रहे हैं इसलिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम हमारे संविधान को बेहतर ढंग से समझे और उसकी रक्षा के लिए अधिक मेहनत से काम करें। उन्होंने यह भी लिखा कि 'ऐसा प्रतीत होता है कि प्रजातन्त्र खतरे में है'।

दोनों ही पत्र, धार्मिक अल्पसंख्यकों की पीड़ा की अभिव्यक्ति प्रतीत होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिंसा की घटनाओं की भीषणता और संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। यद्यपि ईसाई-विरोधी हिंसा बहुत स्पष्ट दिखलाई नहीं देती और कई लोग तो यह भी कहते हैं कि वह हो ही नहीं रही है परन्तु तथ्य यह है कि छोटे पैमाने पर देश के अलग-अलग स्थानों में इसाइयों के विरुद्ध हिंसा निरंतर जारी है और ऐसी अधिकांश घटनाओं की खबर राष्ट्रीय मीडिया में स्थान नहीं पाती। वर्ल्ड वाच लिस्ट 2017, भारत को ईसाईयों की प्रताड़ना के संदर्भ में नीचे से 15वें स्थान पर रखता है। चार साल पहले भारत इस सूची में 31वें स्थान पर था।

इवेनजेलिकल फेलोशिप ऑफ इंडिया के विजेश लाल के अनुसार, उन्होंने पिछले वर्ष ईसाईयों के विरुद्ध और अन्य तरह की प्रताड़ना के 350 प्रकरणों का दस्तावेजीकरण किया है। भाजपा के सत्ता में आने के पूर्व ऐसी घटनाओं की संख्या प्रतिवर्ष 140 थी। सन् 2017 में ईसाईयों के विरुद्ध हिंसा की घटनाओं की संख्या, उड़ीसा में सन् 2008 में हुई भयावह ईसाई-विरोधी हिंसा के बाद में सबसे अधिक है।

सन् 2017 के क्रिसमस के आसपास, मध्यप्रदेश में केरोल गायकों पर हमला हुआ और धर्मांतरण करवाने के आरोप में उनके विरुद्ध प्रकरण भी दर्ज किया गया है। ईसाई समुदाय के नेताओं का कहना है कि ईसाईयों के विरुद्ध हिंसा में इसलिए बढ़ोत्तरी हो रही है क्योंकि जमीनी स्तर पर ऐसी हरकतें करने वालों को बड़े नेताओं की ओर से फटकारा नहीं जाता।

देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समूह मुसलमानों के विरुद्ध हिंसा की घटनाओं में भी सन् 2017 में वृद्धि

हुई। सन् 2014 में इस तरह की 561 घटनाएँ हुईं थीं, जिनमें 90 व्यक्ति मारे गए थे। इसके बाद के वर्षों में हिंसा की घटनाओं और उनमें मरने वालों की संख्या (कोष्ठक में) इस प्रकार थीं : 2015-650 (84), 2016-703 (83), 2017-822 (111)। पवित्र गाय व बीफ भक्षण के मुद्दों पर पीट-पीटकर लोगों की हत्या करने की घटनाएँ भी तेजी से बढ़ी है। इंडियास्पेन्ड द्वारा मीडिया में आई खबरों के आधार पर की गई विवेचना के अनुसार 'गाय के जुड़े मुद्दों पर पिछले आठ वर्षों (2010-2017) में हुई हिंसा की घटनाओं में से 51 प्रतिशत के शिकार मुसलमान थे और 63 ऐसी घटनाओं में मारने वाले 28 भारतीयों में से 86 प्रतिशत मुसलमान थे।' इन घटनाओं में से 97 प्रतिशत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मई 2014 में सत्ता में आने के बाद हुई गाय से संबंधित हिंसा में से आधी घटनाएँ (63 में से 32) उन राज्यों में हुई, जहाँ भाजपा की सरकारें हैं। विहिप के प्रवक्ता ने जो कहा था लगभग उसी तरह की बात अन्य हिन्दू राष्ट्रवादी नेता भी कह रहें हैं। उनका तर्क है कि चर्च के नेता भला ऐसे वक्तव्य कैसे दे सकते है जिनके राजनैतिक निहितार्थ हो। वे ऐसे मुद्दों पर अपनी राय सार्वजनिक कैसे कर सकते हैं जिनसे चुनावों पर असर पड़ने की संभावना हो।

उड़ीसा के क्योंझर में सन् 1999 में ग्राहम स्टेन्स की हत्या के पहले तक, चर्च के नेता टिप्पणियाँ करने से बचते थे। उसके बाद से कुछ पादरियों ने समुदाय की पीड़ा को व्यक्त किया। सामान्यत: चर्च के नेता चुपचाप अपनी प्रार्थना और सामुदायिक सेवा कार्यों में लगे रहते हैं। ईसाईयों के विरुद्ध तेजी से बढ़ती हिंसा की घटनाओं के बाद उनमें से कुछ इस विषय पर बोलना शुरु किया है।

देश का वातावरण दिन प्रतिदिन अधिकाधिक असहिष्णु होता जा रहा है और मुसलमान और ईसाई दोनों इसका परिणाम भुगत रहा है। क्या धार्मिक नेताओं को राजनैतिक विषयों पर बोलना चाहिए? क्या यह सही नहीं है कि एक योगी को सत्ता में नहीं होना चाहिए। हमारे जैसे समाज, जो पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष नहीं है, मैं पुरोहित वर्ग को दुनियावी विषयों पर बोलना ही होगा। हम देख रहे हैं कि किस तरह हिन्दू बाबाओं और साध्वियों की एक बड़ी भीड़ राजनैतिक में घुस गई। विहिप, जिसके नेता ने आर्चबिशप के वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, भी एक धार्मिक संगठन है, जिसका राजनैतिक एजेंडा है। हमारे देश में बड़ी संख्या में धार्मिक व्यक्तियों ने राजनैतिक और चुनावों को प्रभावित करने के प्रयास किया है। करपात्री महाराज ने हिन्दू कोड बिल का विरोध किया था और सन् 1966 में साधुओं ने गौवध पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर संसद तक यात्रा निकाली थी।

प्राप्त बंगला पुस्तक मुसलमानों की दुर्गा पूजा

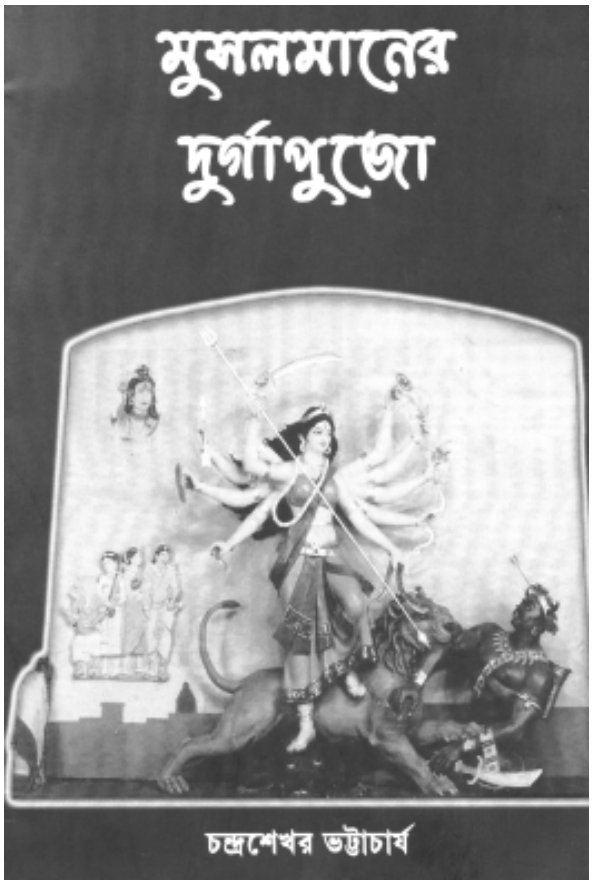

कविता

उदय भानु पांडे, लखनऊ, 9455872862

आओ,
संध्या बेला,
एस्पलेनेड पर
वही मिलते हैं,
जहाँ मिलते हैं,
जहाँ पहले,
मिला करते थे।
पुनः एक बार,
अनुभव करते हैं,
भीड़ भाड़,
शोर शराबे के बीच,
कैसे अपनी,
नितांत अपनी,
दुनिया में खो जाते थे,
हम दोनों।
गुजरते वक्त का,
अंदाज क्यूँ नहीं होता था?
डिजिटल घड़ी की,
चमक में पढ़े गये,
वो घण्टे और मिनट,
अचरज में डाल देते थे,
तुमको भी, मुझको भी।
अंदर बहुत अंदर
कुछ भी नहीं बदला है,
न मेरे, न तुम्हारे।
पुनः एक बार,
आज की शाम,
अनुभव करते हैं।
आओ,
संध्या वेला,
एस्पलेनेड पर
वही मिलते हैं-

उनकी नजर में दीनदयाल

सेराज खान बातिश
3-बी, बंगाली शाहवारसीलेन
दूसरा तल, फ्लैट नं.-4, खिदिरपुर
कोलकाता - 700 023
(मो॰) 9339847198
E-mail : serajkhan072@gmail.com

मुगलसराय हुआ, अब दीन दयाल,
तुम्हारे कत्ल का है, इंतिकाम दीनदयाल
जो नाम सीने में चुभते हैं गैर मजहब के,
उन्हें भी करना है जब तेरे नाम नाम दीनदयाल
जिन्होंने वर्षों से हमको दबा के रखा था,
वे कर रहे हैं अब खुद सलाम दीनदयाल,
ये ताजमहल, ये कुतुबमीनार, लाल किला,
सभी से ऊँचा है, तेरा पयाम दीनदयाल,
बहुत सताया है, सत्ता के इन हरीफों ने,
अब उनसे करना है, सीधा कलाम दीनदयाल
कहां अजाद, वे 'नेहरू', 'भगत' व गांधीजी,
तुम्हारे नाम का बस, धूमधाम दीनदयाल,
हमारा वक्त है, हम संविधान बदलेंगे-,
तुम्हारे इज्म को करना है, आम दीनदयाल,
तुम्हारे नाम से परिचित, कहां थे हम वासी,
तुम्हारा नाम है अब सुबह-व-शाम दीनदयाल,
थे कौन सुनता है, 'बातिश' से वामपंथी को,
ये हिन्द देश है, हिन्दू कायम दीनदयाल।

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal, India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

❑ विविध ❑

यह बांग्ला पत्रिका 'जनस्वार्थ वार्ता' है इसके १६ जून अंक में एक खबर विशिष्ट है। सागर त्रिपाठी (मुम्बई) लिख रहें हैं, हजरत मुहम्मद पर गीत। सागर त्रिपाठी से मेरी मुलाकात मुम्बई मुशायरे में हुई। उनके बुलाने पर मैं उनके घर गया। काला घोडा क्षेत्र में सागर त्रिपाठी एक जाना माना नाम है। सम्पादक

माध्यमिकের প্রথম দশে পাঁচ মুসলমান

বার্তা প্রতিবেদন: এবারের মাধ্যমিক পরীক্ষার মেধা তালিকায় প্রথম দশে আছেন মোট ৫৬ জন। এর মধ্যে মুসলমান পড়ুয়া রয়েছেন পাঁচ জন। তাদের মধ্যে সবচেয়ে বেশি নম্বর পেয়েছেন দক্ষিণ দিনাজপুরের বংশীবিহারী হাইস্কুলের ছাত্রী জুমানা নার্গিস। নার্গিস ৭০০-র মধ্যে ৬৮২ নম্বর পেয়ে মেধা তালিকায় অষ্টম স্থানে রয়েছেন। তার পরেই রয়েছেন মালদার মোজামপুর উচ্চ মাধ্যমিক হাইস্কুলের ছাত্র মুহাম্মদ রফিকুল হাসান। রফিকুল ৬৮১ নম্বর পেয়ে মেধা তালিকায় নবম স্থানে আছেন। সমপরিমাণ নম্বর পেয়ে নবম স্থানে আছে বীরভূমের সিউড়ি পাবলিক অ্যান্ড চন্দ্রঘাটি মুস্তাফি মেমোরিয়াল হাইস্কুলের ছাত্র সোহম আহমেদ। মালদার বামনগ্রাম এইচএমএএম হাইস্কুলের ছাত্রী তামান্না ফিরদৌস মাধ্যমিকে ৬৮০ নম্বর পেয়ে দশম স্থানে আছেন। একই নম্বর পেয়ে দশম স্থানে আছেন মালদা রামকৃষ্ণ মিশন বিবেকানন্দ বিদ্যামন্দিরের ছাত্র মীর মুহাম্মদ ওয়াসিফ।

রেড ক্রশে পরিবেশ দিবস

বার্তা প্রতিবেদন: বিশ্বপরিবেশ দিবসে ভারতীয় রেড ক্রশ সোসাইটি-র পশ্চিমবঙ্গ শাখা 'প্লাস্টিক বর্জন' কর্মসূচি গ্রহণ করল। সোসাইটির কার্যালয়ে অনুষ্ঠানে সভাপতিত্ব করেন চিত্তরঞ্জন দাস। সাধারণ সম্পাদক শ্যামলকান্তি সরকার সভায় প্লাস্টিক

হজরতকে নিয়ে গান বাঁধছেন হিন্দু পুরোহিত

বার্তা প্রতিবেদন: অসহিষ্ণুতার ভূরি ভূরি উদাহরণে যখন সংবাদ শিরোনাম ছয়লাপ, সহিষ্ণুতার ছোট্ট একটা নজিরই নজর কাড়ে তখন। ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক হজরত মহম্মদের গুণকীর্তন করে চলেছেন এক হিন্দু পুরোহিত।

ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক হিসেবে নয়, হজরতকে তিনি দেখেন বিশ্ব মানবতার অনন্য প্রতিষ্ঠান হিসেবে। সাম্প্রদায়িক সম্প্রীতির নজির হিসেবে হজরতকে চেনান তিনি। তিনি সাগর ত্রিপাঠি। তাঁর বাড়িতেও ছড়িয়ে ছিটিয়ে রয়েছে এরকম অজস্র উদাহরণ। সেখানে রয়েছে মুসলিমদের পবিত্র ধর্মগ্রন্থ কোরান, রয়েছে হজরতের জীবনী। এরই সঙ্গে সেখানে রয়েছে হিন্দুদের পবিত্র গ্রন্থ গীতা ও রামায়ণ। সাগরের ঘরে বিশাল সোফার পেছনে রয়েছে নমাজ পড়ার জায়গা।

বলে রাখা ভাল, সাগর ত্রিপাঠি পরিবার রাম লীলা বিন্যাসের পৃষ্ঠপোষক, যারা অযোধ্যার রাম মন্দিরের ট্রাস্টি। কিন্তু ৬৮ বছর বয়সী সাগর ত্রিপাঠী এই পরিচয় মানেন না। অযোধ্যার পণ্ডিত পরিবারের একজন হয়ে বাবরি মসজিদের জায়গায় রাম মন্দির নির্মাণের বিষয়টিকে কীভাবে দেখেন, এই প্রশ্নে অবশ্য তিনি কোনও মন্তব্য করেননি। কারণ তাঁর মত, এটা আদালতের বিচারাধীন বিষয়। তবে তাঁর দাবি রাজনীতি যদি এই ইস্যু থেকে দূরে থাকে, তবে সমস্যার সমাধান সম্ভব।

উত্তরপ্রদেশের সুলতানপুর জেলায় জন্ম হয় তাঁর। এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয় থেকে স্নাতকোত্তর ডিগ্রি নেওয়ার পর পরিবার চাইছিল, তাঁদের ছেলে হবে সরকারি আধিকারিক। কিন্তু উর্দু কবি রঘুপতি সহাই ফিরাকের প্রভাবে কবি জীবনই বেছে নেন সাগর ত্রিপাঠী।

पेंटिंग खरीदना और हुआ आसान

इस माह की पेंटिंग

THE CREATOR

साइज :- 16 इंच ×20 इंच

मीडियम : एक्रिलिक आन कैनवास

न्यूनतम बिडिग मूल्य : **13,000.00**

बिडिंग की अन्तिम तिथि : 30 अगस्त 2018

आपको पेंटिंग के साथ मिलेंगें :-

(i) Certificate of authentification.

(ii) Sale receipt.

(iii) सदीनामा की पाँच वर्ष की सदस्यता

सम्पर्क करें - 9231845289

ई-मेल : sadinama2000@gmail.com

पेंटिंग का चित्र कवर पर देखें

इस माह की चित्रकार–
सुलोचना सारस्वत,
विश्व भारती विश्वविद्यालय फेम।

कोलकाता क्यों मुम्बई से पीछे रह गया जबकि ब्रिटिश काल में दोनों की महानता समान थी।

मैं कोलकाता में उन दिनों पैदा हुआ जब मुंबई को कोलकाता के समक्ष पिछड़ा हुआ शहर माना जाता था । कोलकाता में जब भारत की टॉप 5 कंपनियों में से तीन बिड़ला, जेके, थापर के मुख्यालय थे। टाटा मुम्बई से कोलकाता शिफ्ट होने वाले थे, इसके लिए टावर भी बना लिया था।

कोलकाता लगभग सभी बहुउद्देशीय कंपनियों का मुख्यालय था। भारत के सभी एयरपोर्ट को मिलाकर भी सबसे अधिक उड़ाने कोलकाता में संचालित होती थीं।

कोलकाता समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का केन्द्र था और साथ ही विभिन्न संस्कृतियों का भी। ये बौद्धिक, कलाकारों, फिल्म जगत से जुड़े लोगों का पसंदीदा स्थान था।

लेकिन पश्चिम बंगाल एक विस्फोट के मुहाने पर बैठा था। राज्य सरकार ने इसी समय कृषि क्षेत्र में भूमि सुधार का काम छोड़ दिया। बहुसंख्य खेतिहर अभी भी बिना जमीन के थे, उन्हें बँधुआ मजदूर की तरह काम करना पड़ता था। अब तक के सबसे अच्छे मुख्यमंत्री जी डॉ॰ विधानचन्द्र राय की मृत्यु के पश्चात् भूमि सुधार का काम ठप पड़ गया।

कम्युनिष्ट पार्टी ने इस निर्वात को भर दिया। उन्होंने उद्योगपतियों, सेठ साहूकारों को गरीब का खून चूसने वाला घोषित कर दिया और उनके विरुद्ध हिंसा का आहवान किया। ये वो समय था जब सम्पूर्ण विश्व में वामियों के छद्म आदर्शवाद का उभार जोरो पर था।

जब वो सत्ता में आये तो मिलों में हड़ताल होना सामान्य बात हो गई। प्राय हड़ताल हिंसा का रूप ले लेती, जिसमें लोगों को जान भी गँवाना पड़ता। सरकार इस सबका समर्थन करती। बड़े उद्योगपति मुम्बई, दिल्ली, कर्णावती, हैदराबाद आदि शहरों की और भागने लगे।

आदित्य बिड़ला को उनकी कार से बाहर खींच लिया गया, जब वो अपने और मुख्यमंत्री कार्यालय के बीच आधा किलोमीटर की दूरी तय कर रहे थे। उनके कपड़े फाड़ दिए गए और उन पर भद्दे कमेंट्स किये गए जब वो उन फटे कपड़ों और फटी जांघिया के साथ अपने कार्यालय में प्रविष्ट हुए। उस शाम के बाद वो पुन: कभी पश्चिम बंगाल नहीं गए। उन्होंने अपने समूचे संगठन को मुम्बई स्थानान्तरित कर दिया।

टाटा ने तुरन्त अपना निर्णय बदल दिया और मुंबई से ही अपना काम चालू रखा। जेके और थापर ने भी डरकर बंगाल छोड़ दिया। छोटी और मंझोली कम्पनियों ही बची थीं, वो भी बहुत ही कम क्षेत्र में।

तब फरवरी 1968 में रविन्द्र सरोवर स्टेडियम में 'अशोक कुमार नाइट' का आयोजन था। ये कार्यक्रम कम्युनिस्ट पार्टी के गुंडों से भर गया। स्त्रियों को पकड़कर खींचा गया, बलात्कार किया गया और अंत मे मार दिया गया। उनकी नंगी लाश अगले दिन स्टेडियम के ताल में तैरती मिली। कम्युनिस्ट पार्टी ने इसका ये कहकर बचाव किया कि ये अभिजात्य वर्ग के विरुद्ध गरीबों की क्रान्ति थी।

व्यवसायी अन्य शहरों की ओर भाग लिए। दिल्ली एवं उससे सटे कस्बे फरीदाबाद, गाजियाबाद आदि इन मझौले उद्योगों के नए केन्द्र बन गए। कर्णावती, बड़ोदरा, राजकोट ने भागे हुए गुजरातियों, मारवाड़ियों, पारसियों को आकर्षित किया। बड़ी और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कम्पनियों ने अपना सब कुछ छोड़ के भागने में भलाई समझी।

बौद्धिक और कलाकार भी भागे। कोई भी वहाँ कार्य नहीं करना चाहता था। शिक्षा विभाग ध्वस्त हो गया। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की नई पीढ़ी को inductance और capacitance के बीच अन्तर नहीं पता था। बाजार मुरझाने लगा।

राज्य गरीब और दरिद्रता के दुष्चक्र में फैसला चला गया। कम्युनिस्ट पार्टी ने चुनाव जीतने के आधार पर भूमि सुधार किया जिससे उसे ग्रामीण क्षेत्रों को वोट मिले। इसका परिणाम था कि पार्टी सात बार लगातार चुनाव जीतती चली गई। बीच में कांग्रेस का एक बार 5 साल का शासनकाल 1972-77 तक रहा था।

कमल पदम ने इसका उत्तर कोरा साइट पर दिया है। मूल लेख अंग्रेजी में है जिसका मैंने अनुवाद कर आपके समझ प्रस्तुत किया है।

पुणे भ्रमण नौ से पाँच

अगर आपके पास पुणे में एक दिन का समय हो तो आप पुणे को समझ सकते हैं। मुझे पुणे से रात के एक बजे फ्लाइट पकड़नी थी सुबह सुबह पुणे पहुँचा। तो पता चला दर्शन म्यूजियम के पास से सारे दिन के लिए टूरिष्ट बस मिलती है। बुकिंग आनलाइन भी है। दर्शन म्यूजियम सुबह सुबह खुलता है इनमें साधु वासवानी का म्यूजियम है जो उनके जीवन को बहुत अच्छे तरीके से दर्शाते हैं। दूसरा पड़ाव मिला आगा खाँ पैलेस, यह वही पैलेस है जिसमें गाँधीजी अपनी धर्मपत्नी बा और सचिव महादेव देसाई के साथ कैद थे यही पर उनकी धर्मपत्नी की मृत्यु हुई जिनकी समाधि नहीं है। आगा खान पैलेस उन गिने चुने संग्राहलयों में एक है जिसे आगा खान ने भारत सरकार को सौंप दिया। सर आगा खान का यह महल बहुमंजिली है। सबसे बड़ी बात बताई जाती है कि इसे अकाल के समय लोगों की मदद के लिए बनवाना शुरु किया गया था। तीसरा पड़ाव था शिंदे छतरी, इसमें सिंधिया वंशजों के चित्र हैं, सिंधिया बंश के संस्थापक महादजी शिंदे हैं और इसको देखभाल ग्वालियर राज्य से होती है। यही सारस बाग है जिसमें एक विशाल मंदिर है। यही पर जापानी स्टाइल पर बना पुल देशपाण्डे / जापानी / योकोहामा उद्यान है। इन दोनों का दिखाकर हमें ले जाया गया, केलकर म्यूजियम यह राजा दिनकर केलकर ने बनवाया इसमें मराठा काल की पहचान के तमाम दस्तावेज है। इसके बाद हम गये शनिवारबाग जो आज टूटा फूटा है। बाहर का परकोटा फिर भी ठीक है पर भीतर का महल अंग्रेजों ने पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है। शनिवार बाड़ा से हम दगहू सेठ हलवाई दुकान से गुजरते हुए रेलवे स्टेशन के सामने छोड़ दिया गया। यहा हमने मार्केटिंग की एक यूपी वाले भैया से खूब बतियाये ओटो लिया और सीधे एअरपोर्ट पहुँचे।

–जितेन्द्र जितांशु

हिंदी और हावड़ा के गौरव थे पत्रकार राजकिशोर

संवाददाता ▷ कोलकाता

पत्रकार राजकिशोर हिंदी के एक कुशल गद्यकार, राजनीतिक विश्लेषक और चिंतक थे. उनके पाठकों का एक बड़ा समुदाय था. वे कवि और उपन्यासकार होने के अलावा अपने युवा काल में विभिन्न आंदोलनों से भी जुड़े रहे हैं. हावड़ा उनकी जन्मभूमि और लंबे समय तक कोलकाता कर्मभूमि थी. वे गांधी और लोहिया के विचारों से प्रभावित थे. सही अर्थों में स्वतंत्र पत्रकार और हिंदी के प्रायः सभी बड़े अखबारों के स्तंभ लेखक के रूप में उन्होंने हिंदी पत्रकारिता में एक कीर्तिमान स्थापित किया है. राजकिशोर की 71 साल की

अवस्था में दिल्ली में निधन के बाद लालबाबा कॉलेज, बेलूड़ में आयोजित एक स्मरण सभा में हिंदी लेखकों और समाजसेवियों ने अपने प्रिय लेखक को याद किया और श्रद्धांजलि अर्पित की. इस अवसर पर उनकी जीवन-यात्रा पर सौमित्र जायसवाल ने एक सुंदर डिजिटल प्रस्तुति की. राजकिशोर के विद्यार्थी जीवन के सखा डॉ शंभुनाथ ने कहा कि राजकिशोर की सहज, चुटीली और तार्किक भाषा ने हिंदी पत्रकारिता का एक आदर्श खड़ा किया है. उन्होंने विचारों और मूल्यों के लिए जीवन में कभी समझौता नहीं किया. दिल्ली में उनकी अंत्येष्टि बहुत सादगी से हुई, जैसा वे चाहते थे. अभावों तथा शारीरिक व्याधियों से जूझते हुए 50 सालों तक बिना थके वे लिखते रहे. लेखन ही राजकिशोर का जीवन था. राजकिशोर ने भारतीय भाषा परिषद द्वारा आठ खंडों में शीघ्र प्रकाश्य 'हिंदी साहित्य ज्ञानकोश' के भाषा संपादक के रूप में भी काम किया है.

एमएसटीसी के महाप्रबंधक और लेखक मृत्युंजय ने उन्हें याद करते हुए कहा कि राजकिशोर बड़े सहज, मिलनसार और खुशदिल इन्सान थे. वे सच्चे अर्थों में बौद्धिक रूप से स्वतंत्र पत्रकार थे. विद्यासागर विश्वविद्यालय के प्रो. संजय जायसवाल ने कहा कि उनका छल कपट से रहित पारदर्शी व्यक्तित्व और उनके विचार नयी पीढ़ी को प्रेरणा देते रहेंगे. राजकिशोर के मित्र और प्रसिद्ध नाट्यकर्मी महेश जायसवाल ने कहा कि वे अपने निजी दुखों से ज्यादा देश-दुनिया की चिंता करते थे.

लालबाबा कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ संजय कुमार ने उन्हें श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि हावड़ा ने अपना एक बड़ा साहित्यिक रत्न खो दिया. स्मरण सभा में शंकर कुमार सान्याल, शैलेंद्र, प्रो आशुतोष सिंह, बिहारी लाल चौधरी, शिवनारायण गुप्त, चंद्रिका प्रसाद अनुरागी, मंजू बैज, श्रद्धांजलि सिंह, यशवंत सिंह, पूजा गुप्ता, सेराज खान बातिश, जितेंद्र सिंह, ब्रजमोहन सिंह, प्रो.ललित कुमार झा आदि ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए. श्रद्धांजलि देन वालों में थे- डॉ शिवनाथ पांडेय, विष्णु गोस्वामी, जितेंद्र जितांशु, रघुनाथ सिंह, रामजी प्रसाद, काली प्रसाद गुप्त और राजकिशोर के परिवार के अशोक साव, सोनालाल साव आदि.

साभार - प्रभात खबर अखबार का कोलकाता संस्करण, 19 जून 2018

❑ जीवनी ❑

आधुनिक भारत के निर्माताओं में एक पी॰वी॰नरसिंह राव

पमुलपति वेंकटपति नरसिंहाराव (विशेषत: पी.व्ही के नाम से जाने जाते हैं।) एक भारतीय वकील और एक राजनेता थे, जिन्होंने 1991 से 1996 तक भारत का प्रधानमंत्री बनकर सेवा की थी । उन्हें प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय राजनैतिक रूप से काफी महत्वपूर्ण था क्योंकि हिन्दी न बोलने वाले क्षेत्र से वे पहले प्रधानमंत्री थे जो भारत के दक्षिण भाग में रहते थे।

प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए उन्होंने बहुत से विभागों में काम किया था। औद्योगिक क्षेत्र में लाइसेंस राज को खत्म करने में भी नरसिंम्हा राव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके कार्यों को देखकर भारत में उन्हें ''भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार का जनक'' भी कहा जाता है।

भविष्य के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह ने राव की सरकार द्वारा निर्धारित की गई आर्थिक योजनाओं को शुरु रखते हुए उनके द्वारा बताए गए उपायों का पालन भी किया था। इसके साथ ही राजीव गाँधी की सरकार द्वारा लागू किये गए लाइसेंस राज को खत्म में भी उन्होंने बहुत से कार्य किए हैं।

एक इतिहासिक आर्थिक बदलाव करते हुए उन्होंने ही डॉ. मनमोहन सिंह को आर्थिक मंत्री बनाया था। राव के जनादेश से ही डॉ॰ मनमोहन सिंह ने भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया और इंटरनेशनल मोनेटरी फण्ड योजनाओं में भी बहुत से बदलाव किये ताकि वे देश की आर्थिक व्यवस्था को सुधार सकें।

भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने राव का वर्णन करते हुए उन्हें बताया कि वे ''एक देशभक्त हैं जिनका ऐसा मानना है कि राष्ट्र हमेशा राजनीति से बड़ा है।'' राव ने 1996 में कलाम को न्यूक्लियर टेस्ट करने के लिए भी तैयार किया था लेकिन उसी साल जनरल चुनाव होने की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। इस टेस्ट को बाद में NDA सरकार में बाजपेयी वाली सरकार ने आयोजित किया था।

भारत के इतिहास में राव का प्रधानमंत्री कार्यकाल काफी प्रभावशाली साबित हुआ था। प्रधानमंत्री बनने के बाद वे जवाहरलाल नेहरू को मिश्रित प्रणाली को ही भारत में चला रहे थे और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) को भी देश की मुख्य पार्टी बनाया क्योंकि देश में आजादी के बाद से लगभग ज्यादातर समय कांग्रेस का ही राज था। इसके बाद उत्तर प्रदेश में जब बीजेपी के कल्याण सिंह राज्य के मुख्यमंत्री थे तब अयोध्या को बाबरी मस्जिद को गिराना भी उन्हीं के कार्यकाल में हुआ था, उस समय आजादी के बाद यह हिन्दू-मुस्लिम के बीच हुआ सबसे बड़ा विवाद था।

2004 ने दिल्ली में हार्ट अटैक आने के बाद राव की मृत्यु हो गयी थी। हैदराबाद में उनका अंतिम संस्कार किया गया था। वे एक बहुमुखी चरित्र वाले इंसान थे और बहुत से विषयों में उनकी रुचि थी जैसे की साहित्य और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर। वे तकरीबन 17 भाषाएँ बोलते थे।

पी.व्ही.नरसिम्हा राव का प्रारम्भिक जीवन :-

पी.व्ही.नरसिम्हा राव एक नम्र सामाजिक इंसान थे। उनका जन्म वरंगल जिले के नारासंपेट में लकनेपल्ली के पास नियोगी परिवार में हुआ था लेकिन बाद में उन्हें दत्तक ले लिया गया था और फिर वे तेलंगना के करीमनगर जिले के भीमदेवारापल्ली मंडल के वनग्र गाँव में रहने लगे थे।

उस समय तेलंगना हैदराबाद का ही एक भाग था। उनके पिता पी. सीताराम राव और माता रुक्मिनीअम्मा अग्ररियन परिवार से थी। साधारणत: वे पी.व्ही. के नाम से जाने जाते हैं, प्राथमिक शिक्षा उन्होंने करीमनगर जिले के भीमदेवारापल्ली मंडल के कटकुरु गाँव में पूरी की थी, वहाँ वे अपने रिश्तेदार गब्बेता राधकिशन राव के घर में रहते थे और ओस्मानिया

यूनिवर्सिटी के आर्ट्स कॉलेज में बेंचलर डिग्री हासिल करने के लिए पढ़ते थे।

बाद में वे हिस्लोप कॉलेज पढ़ने के लिए गये, जो अब नागपुर यूनिवर्सिटी के अधीन आता है। वहां रहते हुए उन्होंने लॉ में मास्टर डिग्री पूरी की थी।

राव की मातृभाषा तेलगु थी और मराठी भाषा पर भी उनकी अच्छी-खासी पकड़ थी। इसके साथ-साथ दूसरी आठ भाषाओं (हिन्दी, ओरिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, संस्कृत, तमिल और उर्दू भाषा) के साथ-साथ वे इंग्लिश, फ्रेंच, अरबिक, स्पेनिश, जर्मन और पर्शियन भाषा भी बोल लेते थे। अपने चुलत भाई पामुल्पर्थी सदाशिव राव थे। नरसिम्हा और सदाशिव राव दोनों ही साथ में अपने उल्लास जय-विजय के नाम से आर्टिकल लिखते थे।

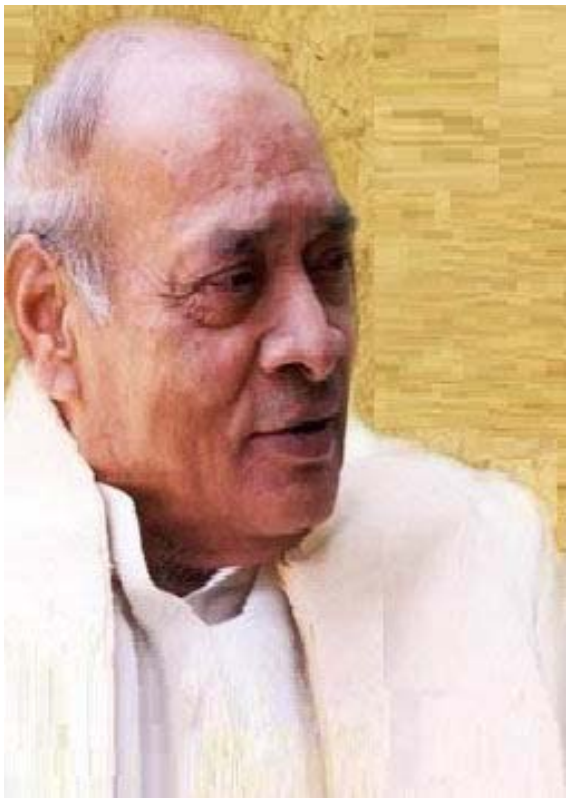

नरसिम्हा राव को तीन बेटे और पाँच बेटियाँ हैं। उनका सबसे बड़ा बेटा पी.व्ही.रामाराव, कोटला विजय भास्कर रेड्डी की कैबिनेट में शिक्षा मंत्री और वरंगल जिले के हनमकोंडा असेंबली चुनावक्षेत्र में दो बार MLA भी बन चुके हैं। उनका दूसरा बेटा पी. व्ही. राजेश्वर राव 11वीं लोकसभा (15 मई 1996-4 दिसम्बर 1997) में संसद के सदस्य भी थे। सिकंदराबाद लोकसभा चुनाव क्षेत्र से वे चुने गये थे।

नरसिम्हा राव राजनैतिक कैरियर :-

भारतीय स्वतंत्रता अभियान के समय में नरसिम्हा राव एक सक्रिय नेता थे और साथ ही साथ वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य भी थे। आज भी आंध्रप्रदेश में मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल को याद किया जाता है, क्योंकि तेलंगाना क्षेत्र में जमीन अधिकारों को लेकर उन्होंने बहुत से अहम बदलाव किये थे, जो प्रभावाली साबित हुए थे। उनके कार्यकाल में जय आंध्र आन्दोलन के समय राज्य में राष्ट्रपति शासन भी लागु किया गया था।

1972 में उन्होंने यह, सुरक्षा और विदेशी मुद्दों पर इंदिरा गाँधी और राजीव गाँधी की कैबिनेट में राष्ट्रीय बहस भी की। इसके साथ-साथ यह भी कहा जाता है की 1982 में भारत के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार में जैल सिंह के साथ नरसिम्हा राव भी थे।

1991 में नरसिम्हा राजनीति रिटायर्ड हो चुके थे। लेकिन कांग्रेस के अध्यक्ष राजीव गाँधी की हत्या होने के बाद उन्हें मजबूरन राजनीति में लौटना पड़ा था। उन्हीं की बदौलत 1991 के चुनाव में कांग्रेस ने सर्वाधिक सीटे हासिल की थी और अब तक नेहरू गाँधी परिवार के बाहर के वे पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने पूरा पाँच साल तक देश के प्रधानमंत्री बनकर देश की सेवा की। साथ ही दक्षिण भारत और भारत के आंध्रप्रदेश राज्य से प्रधानमंत्री बनने वाले वे पहले इंसान थे।

जनरल चुनाव में ही राव इसके बाद हिस्सा नहीं ले पाए थे लेकिन नंदयाल के चुनाव में उन्होंने हिस्सा लिया था। नंदयाल के चुनाव में तकरीबन 5 लाख वोटों से जीते थे। उनके इस रिकार्ड को गिनीज बुक ऑफ

वर्ल्ड रिकार्ड में भी दाखिल किया गया था।

उस समय उनके कैबिनेट में शरद पवार का भी समावेश था, जो खुद डिफेन्स मिनिस्टर के रूप में प्रधानमंत्री पद के एक तगड़े उम्मीदवार थे। इसके साथ ही राजनीति के बाहर से भविष्य के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को उन्होने भारत का फाइनेन्स मिनिस्टर बनाकर सभी को चौका दिया था।

इसके साथ ही उन्होंने सुब्रमणियमस्वामी को विरोधी दल का सदस्य मानते हुए स्टैण्डर्ड और इंटरनेशनल ट्रेड का चेयरमैन भी बनाया। इसके बाद उन्होंने विरोधी दल के नेता अटल बिहारी बाजपेयी को UN के जिनेवा में आयोजित मीटिंग में उपस्थित होने के लिए भी भेजा था।

मृत्यु :-

9 दिसम्बर 2004 को राव को हार्ट अटैक आया था और इसके तुरंत बाद ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में भर्ती किया गया और भर्ती करने के 14 दिनों बाद 83 साल की मृत्यु हो गयी। उनका परिवार उनका अंतिम संस्कार दिल्ली में करवाना चाहता था, राव के बेटे प्रभाकर ने मनमोहन सिंह को बताया भी था कि, ''दिल्ली ही उनकी कर्मभूमि है।'' लेकिन सोनिया गाँधी के निर्णय के अनुसार उनके शव को हैदराबाद भेजा गया था।

दिल्ली में उनके पार्थिव शरीर को AICC बिल्डिंग में लाने की आज्ञा नहीं दी गयी थी। इसके बाद उनके शव को हैदराबाद के जुबिली हॉल में रखा गया था। उनके अन्तिम संस्कार में भारत के दसवें प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भी उपस्थित थे, और उनके साथ गृह मंत्री शिवराज पाटिल और भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और डिफेन्स मिनिस्टर प्रणव मुखर्जी और फाइनेंस मिनिस्टर पी. चिदम्बरम और दूसरे राजनेता भी मौजूद थे। उन्हें सम्मान देते हुए तेलगांना सरकार ने भी उनके जन्मदिन पर 2014 में तेलांगना राज्य उत्सव घोषित किया।

दो कविताएँ सुरेश शॉ की

सुरेश शॉ
8, पॉटरी रोड,
कोलकाता-700015
मो.-9163707510

1. पलटवार

गैर मुहल्ले के
एक कुत्ते पर
कई कुत्ते सहसा झपटे
कुत्ता भाग-भाग, भागा।
अचानक ठिठका
सोचा
मैं आदमी थोड़े ही हूँ।
पलटा
दौड़ लगाई
ठाँव - पहुँचा
गुर्राया - आँखें दिखाई,
कुत्ते किं - किं किंकियाने लगे हैं

2. मैं

दो विशेष अवसरों पर
आपके घर नहीं होता
एक,
जब आपका विवाह हो रहा होता है
दूसरा
जब आपकी मैयत निकल रही होती है।
विवाह का खाना
मुझसे हजम नहीं होता,
मैयत पर रोना
मुझसे सहा नहीं जाता।
देह और दिल
जहाँ
दोनों को कष्ट मिले,
वहाँ
क्या - खुशी
क्या - गम मनाना।

❑ इतिहास ❑

कश्मीर युद्ध

आज के कश्मीर की हालात को देखते हुए लगता है कि कश्मीर में अलगाव आंदोलन बहुत पुराना है। आजादी के समय के हालात में लड़े गये कश्मीर युद्ध में कश्मीरियों ने पाकिस्तान का गली -दर -गली तथा मुहल्ला-दर-मुहल्ला घोर विरोध किया । आज कोई भी राय बनाने के निर्णय से पहले इस युद्ध को समझा जाना जरूरी है।

–सम्पादक

देश ने सभी सम्भव क्षेत्रों और विशेषकर सुरक्षा के क्षेत्र मे जिस तेजी से प्रगति की है उसपर हम गर्व कर सकते हैं। पिछले 25 वर्षों के दौरान दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान से लड़े गए युद्ध से प्राप्त महान् विजय से बड़ी इस बात की साक्षी और क्या हो सकती है।

स्वतन्त्रता से पहले और उसके तत्काल बाद हमारी स्वतंत्रता के निर्माताओं के सामने कैसी एक विराट समस्या थी, इसे समझने के लिए हमें उस समय वर्तमान स्थिति का जायजा लेना होना। उस समय देश की सुरक्षा-चक्र से जुड़ी थी। 1939-45 के युद्ध के बाद 1946 में यह महसूस किया गया कि थोड़े-से पैदल डिविजन, एक बख्तरबंद डिवीजन, एक विमानवाहित डिवीजन, कुछ सीमारक्षक ब्रिग्रेड, तीन क्रूजरों के केन्द्रक पर निर्मित एक संतुलित नौसैनिक बेड़ा तथा वर्तमान दस वायुसैनिक स्क्वाड्रनों, बमवर्षकों, लड़ाकू विमानों और वाहक विमानों की संख्या को दुगुनी करके उपमहाद्वीप की सुरक्षा-जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। विभाजन के समय थलसेना में 2,60,000 सैनिक थे और 88 पैदल बटालियनें, 12 टैंक रेजीमेंट, 18½ तोपखाना रेजीमेन्ट, 61 इंजीनियर यूनिटें तथा अन्य सिंगनल, सैनिक पूर्ति, आर्डनेन्स, चिकित्सा तथा ई॰एम॰ई॰ यूनिटें थीं।

पूरा संगठन - शास्त्रों और साज-सामानों को ढाँचा और योजना - अंग्रेजों की देन थी। हम इस ढांचे का अनुसरण करते रहे और कुछ सीमा तब अब भी कर रहे हैं। केवल एक विशिष्ट अन्तर पड़ा है। वह यह कि अब हम ब्रिटिश सुरक्षा-चक्र से संबंधित नहीं रहे हैं। ब्रिटिश कामनवेल्थ में निहित आश्वासनों और गारण्टियों ने पहले के शासकों के साथ हमारे संबंध-सूत्रों को मजबूत किया। इस प्रकार, जहाँ हम एक स्वतंत्र राष्ट्र की सभी वास्तविकताओं का लाभ उठाते रहें, वहाँ कामनवेल्थ के इस कवच ने आर्थिक विकास के पूरे ढाँचे को आजादी से निर्मित कर सकने में हमारी सहायता की। हमारी योजना बनाने वालों ने आर्थिक विकास पर अधिक और सुरक्षा पर जो कम ध्यान दिया उसके लिए भी यही कवच अंशत: जिम्मेदार रहा।

आजादी के कुल तीन महीनों के भीतर लड़ा गया काश्मीर युद्ध भारतीय सेना की शानदार उपलब्धियों का एक जीता-जागता स्मारक है। युद्ध के इतिहास में यह उन कुछ युद्धों में से एक है, जिनमें इतनी थोड़ी योजना और कम तैयारी के बावजूद इतना अधिक हासिल किया गया।

विशाल संख्या में शरणार्थियों के नई सीमा के इस पार आगमन ने हमारे सैनिक और नागरिक संगठनों की काफी अधिक हिला डाला था। पंजाब के सीमा-क्षेत्र बुरी तरह अस्त-व्यस्त थे। इन कठिनाइयों के बावजूद हमें काश्मीर अभियान को हाथ में लेना पड़ा था।

पाकिस्तान ने इस अभियान की योजना पूरी बारीकी से बनाई थी। काश्मीर के महाराजा की दुलमुल मन:स्थिति का तथा भारत के अन्य कामों में व्यस्त होने का लाभ उठाकर राज्य में सीमावर्ती मुठभेड़ें की गई और शीघ्र ही डोमेल-श्रीनगर सड़क के साथ-साथ एक भरपूर बहुमूखी आक्रमण शुरु कर दिया गया। 500 मील की सीमा को भी कितने ही स्थानों पर छेद डाला गया। राज्य की सैनिक और पुलिस गैरिसने नाकाफी थीं और ऐसे आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं थी। उन्हें शीघ्र ही या तो बिखर जाना पड़ा या छोटी-छोटी टुकड़ियों में बंटकर भिड़ जाना पड़ा।

पाकिस्तान के सैनिक अफसर ठीक आरम्भ से ही इस अभियान का निर्देशन कर रहे थे। फिर भी इसे

कबीलों के विद्रोह का रूप दिया गया। सभी प्रकार के आधुनिक हथियार, असीमित मात्रा में गोला-बारूद, साज-सामान, वाहन और पेट्रोल आक्रामक टुकड़ियों को प्राप्त था। दूसरी ओर भारत ने कोई अग्रिम योजना नहीं बनाई थी। समस्या की विशालता को तब महसूस किया गया, जब कश्मीर में फौजें भेजने का निर्णय लिया गया। आरम्भिक दौर में सभी कुछ एक अस्तव्यस्त ढंग से किया गया। जब पहले दस्ते श्रीनगर में उतरे तब यह भी निश्चित रूप से ज्ञात नहीं था कि हवाई अड्डा भी सुरक्षित है या नहीं। लेकिन जोश और साहस की कमी नहीं थी। जम्मू से श्रीनगर तक कोई ठीक सड़क नहीं थी और 200 मील टुकड़े का रख-रखाव बहुत ही अनुपयुक्त था। चट्टानें बड़ी संख्या में खिसकती थी। बर्फ अपार कठिनाइयाँ प्रस्तुत करती थी और वर्षा के काबिल नहीं था, लेकिन नागरिक एवं वायुसेना के विमान-चालकों ने कमाल कर दिखाया। अन्तिम बात यह कि वहाँ के लोगों, इलाकों और जलवायु के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं थीं। शत्रु सेनापति के जनरल तारीक के साथ-साथ ही जनरल विन्टर (शीत) से भी लड़ा जाना था। कितने ही लोगों ने बर्फ पहले कभी नहीं देखी थी और सैनिकों को एक विषम जलवायु में एक श्रेष्ठतर सेना के विरुद्ध पाले और बर्फ के संकटों को झेलते हुए लड़ना पड़ा था।

श्रीनगर शत्रु का मुख्य लक्षण था। पाकिस्तान की सैनिक गाड़ियों के काफिले ने 20 अक्टूबर 1947 की सीमा पार की ओर 26 तक श्रीनगर पहुँचने की योजना बनाई। भारतीय सेना का पहला दस्ता (पहली सिक्ख बटालियन) लेफ्टिनेण्ट-कर्नल डी॰ आर॰ राय के नेतृत्व में 27 को श्रीनगर उतरी। 26 को तीन से पाँच हजार तक पाकिस्तानी बारामूला में थे। इनमें से कुछ पहले ही हवाई अड्डे के आसपास के क्षेत्रों में बिखर चुके थे।

सैनिकों को लगभग 100 नागरिक और सैनिक विमानों में अधिकतम गति के साथ श्रीनगर ले जाया गया और अगले 20 दिनों में (17 नवम्बर तक) 700 से अधिक उड़ानें भरी गई।

जब भारतीय सेना का जमाव बिना रूके चल रहा था, तब पहले 10 दिनों के बीच पाकिस्तानी लगातार श्रीनगर की ओर बढ़ रहे थे। यह सबसे खतरनाक समय था। इस बीच में हमें कई बार पराजयों का सामना करना पड़ा और ब्रिग्रेडियर राजेन्द्र सिंह, लेफ्टिनेण्ट-कर्नल डी॰ आर॰ राय और मेजर सोमनाथ शर्मा जैसे अच्छे कमाण्डरों को खो देना पड़ा। कुमाऊँ रेजीमेण्ट के मेजर सोमनाथ शर्मा को वीरता के लिए भारत का उच्चतम पुरस्कार परमवीर चक्र और अन्य दो को महावीर चक्र प्रदान किया गया।

पहला बड़ा युद्ध श्रीनगर के बाहरी क्षेत्रों में, शोलाटोना में 7 नवम्बर की सुबह लड़ा गया। यह पूरे दिन चला और अन्त में पाकिस्तानी 300 मृतकों को छोड़कर पीछे भाग गये। इस क्षण से भारतीय सेना लगातार आक्रमण कर रही और 14 नवम्बर तक 65 मील दूर उड़ी में शत्रुओं को सफाया कर दिया गया। शत्रु का मनोबल गिरने और उसके पीछे हटने के बावजूद मोटर वाहनों तथा पेट्रोल की कमी के कारण आगे बढ़ने में देरी होती गई। ऐसा न होता तो भारतीय सैनिक बिना कठिनाई के मुजफ्फराबाद पहुँच गए होते और घाटी को हमेशा के लिए साफ कर दिया गया होता।

गिलगित में वहाँ के गर्वनर ब्रेगेडियर घंसारासिंह के अधीन राज्य की सेना की एक छोटी-सी गैरिसन थी। वहाँ के ब्रिटिश और पाकिस्तानी अफसरों ने विद्रोह कर दिया और थोड़ी छिटपुट लड़ाई के बाद उन्हें बन्दी बना लिया गया। इसके बाद पाकिस्तानी स्कार्दू और आगे कारगिल और लेह की ओर बढ़े।

नीचे दक्षिण में राज्य की सैनिक गैरिसनें राज्य की सीमा के साथ-साथ नौशेरा, झंगर, राजौरी, भिम्बर, मीरपुर, कोटली और पूंछ में थीं। इन सबको घेर लिया गया। हजारों की संख्या में हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियों के आगमन ने इन गैरिसनों की कार्यवाहियों में बाधा पहुंचाई।

ब्रिगेडियर वाई॰ एस॰ परांजये के अधीन एक दल ने 19 नवम्बर को नौशेरा और इंगर ले लिया। 27 को

कोटली ले लिया गया। इस बीच मीरपुर की गैरिसन घेरा तोड़कर बाहर निकल आई। इस पंक्ति के दूर सिरे पर स्थित पूंछ को मुक्त कराने के लिए भी कदम उठाये गए। 20 नवम्बर को एक दल पीर दर्रे में से होकर आगे बढ़ा। लेफ्टिनेण्ट-कर्नल प्रीतमसिंह एक बटालियन के साथ इस दल से जा मिलने में सफल हो गया। इस प्रकार ये गैरिसनें अगले एक वर्ष तक लड़ती रह सकीं, जिसके अन्त में हमारी सेना ने इन्हें मुक्त कराया।

इस बीच झंगर में हमें हार खानी पड़ी और नौशेरा में कठिन युद्ध हुआ। पाकिस्तानियों ने सीमा के बहुत निकट, सम्बा के पास स्थित हमारी प्रमुख संचार लाइन के लिए भी खतरा पैदा कर दिया।

1 फरवरी, 1948 को ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान ने नौशेरा के क्षेत्र में स्थित सबसे ऊँचे ठिकाने कोट में से शत्रु को मार भगाया। सबसे बड़ा युद्ध 6 तारीख को उस समय लड़ा गया जब नौशेरा को मुक्त कराया गया। भारतीय स्थितियो पर 4,000 पाकिस्तानियों ने दक्षिण-पूर्व से और 3000 के उत्तर-पूर्व से हमला किया। इसके साथ ही 5,000 पाकिस्तानी तेंघर पहाड़ी और कोट की हमारी चौकियाँ पर चढ़ आए। यहाँ एक भयानक युद्ध हुआ, जिससे हमारी वायुसेना ने बहुत बढ़िया सहयोग दिया। शत्रु को पीछे धकेल दिया गया। लगभग 2000 (942 शत्रु गिने गए थे) शत्रु मारे गये। हमारी ओर से केवल 29 सैनिक मारे गये और 19 घायल हुए। झंगर की 18 मार्च को मुक्त करा लिया गया।

8 अप्रैल को राजौरी की ओर कूच किया गया। सैकिण्ड-लेफ्टिनेण्ट आर॰ आर॰ राणे, इंजीनियर्स, ने इसी कार्यवाही के दौरान परमवीरचक्र जीता था। इसी दिन बरवाली पहाड़ी पर अधिकार कर लिया गया और उसके बाद चिंगास पर भी। राजौरी 12 अप्रैल को हमारे हाथ में आ गया। इस लड़ाई में 500 पाकिस्तानी मारे गये। हमारी ओर के केवल 11 मरे और 48 घायल हुए। उत्तर में उड़ी क्षेत्र में एक दल ने पाण्डु पहाड़ी पर कब्जा कर लिया और वह 27 तारीख को चकोटी के पास उरूसा क्षेत्र में पहुँच गया। इस समय तक नियमित पाकिस्तानी सेना की यूनिटें मोर्चे पर आ चुकी थीं और उन्होंने मुजफ्फराबाद और डोमेल की ओर हमारे बढ़ाव को रोक दिया था। फिर भी 27 मई को और अधिक उत्तर में टिथवाल पर अधिकार कर लिया गया। कम्पनी हवलदार-मेजर पीरसिंह को इसी क्षेत्र में वीरता का असाधारण पुरस्कार परमवीर चक्र मरणोपरान्त दिया गया। लान्सनायक कर्मसिंह (सिक्ख रेजीमेण्ट) ने अक्टूबर में दूसरा परमवीर चक्र जीता। कुछ ही समय बाद एक भयानक युद्ध के बाद उड़ी के पास स्थित पाण्डू पहाड़ी हमारे हाथ से निकलकर पाकिस्तानियों के हाथों में चली गई।

लेह्द (लद्दाख) पर बने खतरे का मुकाबला एक दोमुंही कार्यवाही के द्वारा किया गया। कारगिल शत्रु के हाथों में होने के कारण एक दल को मनाली से गुजराकर रोहतंग दर्रे के ऊपर से आगे भेजा गया। एयर कमांडर मेहरसिंह के नेतृत्व में वायुसेना ने भी मूल्यवान सहायता दी।

अगस्त 1948 में, पाकिस्तानी गुरेजन घाटी में घुस आए और राजधानी दर्रे (11,500 फुट) को पार करके बांदीपुर पहुँच चुके थे। शत्रु के विरुद्ध कार्यवाही हाथ में ली गई और 28 को गुरेजन को मुक्त करा लिया गया।

ऊपर उत्तर में पाकिस्तानी जोजीला दर्रे (16,000 फुट) में से होकर नीचे उतर आए थे और सोनमर्ग को खतरा पैदा हो गया था। एक बटालियन (पहली पटियाला) ने उन्हें पहाड़ियों में खदेड़ दिया। दर्रे के लिये लड़ा गया युद्ध एक बड़ा ही भीम प्रयास था। यह 1 नवम्बर को शुरु हुआ। दुनिया में पहली बार इतनी ऊँचाई टैंक भेजे गए, जिनका नेतृत्व लान्स-दफादार वचनसिंह ने किया।

इस मजबूत ठिकाने से पीछे धकेल दिये जाने पर शत्रु का मनोबल पूरी तरह टूट गया और वे आगे मुकाबला नहीं कर सके। आक्रमण को जारी रखते हुए हमारे सैनिक दस्तों ने मचोई को छिन लिया और 4 नवम्बर को मटियान पर कब्जा कर लिया। दरास 15 को हाथ में आया और हमारे दस्ते 23 को कारगिल पहुँच गए। इन कार्यवाहियों ने लेह पर आए खतरे को समाप्त कर दिया।

सितम्बर 1948 में पूँछ की सहायता देने का काम

शुरु किया गया। यद्यपि सर्वोत्तम साधनों का और कुशलता का उपयोग इसमें किया गया, फिर भी यह कार्यवाही बहुत लम्बी खिंच गई। 21 नवम्बर को जाकर पूँछ घाटी पर आया खतरा दो दिन बाद चारों ओर की पहाड़ियों के साफ कर दिये जाने के बाद ही टल सका। इस कार्यवाही में पाकिस्तान के 363 सैनिक मरे और 633 घायल हुए। छानबीन की कार्यवाही पूरी सीमा के साथ-साथ दिसम्बर तक चलती रही। इन कार्यवाहियों का पाँचवा परमवीर चक्र राजपूत रेजीमेन्ट के नायक जदुनाथ सिंह को नौशेरा क्षेत्र में मरणोपरान्त दिया गया। युद्ध-विराम 1 जनवरी, 1949 को लागू हुआ, जिसके बाद भूमि पर युद्ध-विराम रेखा का अंकन किया गया।

युद्ध का मूल्यांकन

पाकिस्तान ने इस कार्यवाही की योजना अच्छी तरह तैयार की थी, लेकिन मैदानी कमांडर सैनिक लक्ष्यों को पूरा करने में विफल रहे। जब वे राज्य की राजधानी से कुल 34 मील पर थे, तब वारामूला और उसके आसपास के क्षेत्र में वे लूटमार में और सुन्दर काश्मीरी स्त्रियों के साथ बलात्कार करने में लिप्त हो गए। यह उनकी बड़ी भारी गलती सिद्ध हुई।

यद्यपि नियमित पाकिस्तानी सैनिक अफसर आक्रामक दस्तों का नेतृत्व कर रहे थे, फिर भी उनका संगठन बहुत ढीला-ढाला था और इस संगठन का पूरा लाभ नहीं उठाया गया। उन्हें पूरी युद्ध तान्त्रिक सहायता प्राप्त थी, पर वे उसका पूरा इस्तेमाल करने में विफल रहे। यह आश्चर्यजनक बात है कि राज्य की सेना की छोटी-छोटी गैरिसनें उन्हें लम्बे समय तक सीमा पर रोके रहीं और इस प्रकार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय फौजों के जमाव के लिए समय उपलब्ध करा दिया।

हमारी ओर आरम्भ में योजना का एकदम अभाव रहा। लेकिन जैसे ही काश्मीर की सहायता करने का निर्णय लिया गया, सभी उपलब्ध साधनों का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया गया। फौजों का हवाई जहाज से भेजा जाना एक बहुत बड़ी उपलब्धि था। संभारिकी (लाजिस्टिक) संगठन बिल्कुल नहीं थे और हर चीज अस्थायी आधार पर बनाई गई थी।

उपयोगी सड़क व्यवस्था का एकदम न होना और पूर्ति केन्द्रों से मोर्चों की लम्बी दूरियाँ-ये दो प्रमुख कारण रहें, जिन्होंने हमारी प्रगति को रोके रखा। दूसरी ओर पाकिस्तानी सैनिक अपने पूर्ति-केन्द्रों के बहुत निकट लड़ रहे थे। बनिहाल दर्रे में से कच्चे व कमजोर पुलों पर से गुजरकर ट्रकों को घाटी में उतारने का निर्णय अत्यन्त साहसपूर्ण था और इसने बहुत ही उत्तम फल प्रदान किए। पुराने रास्तों और सड़कों की संभाल और नई सड़कों का निर्माण हमारे इंजीनियरों और पायनियरों के सामने एक बड़ा ही बृहत् कार्य था, जिसे उन्होंने पूरा किया और जिसकी प्रशंसा की जानी चाहिए।

शुरू के दौर में जो भारी हानियाँ सहनी पड़ी और कार्यवाही में देर लगी, वह साधनों की कमी और विशेषकर मोटर-वाहनों एवं पेट्रोल की कमी के कारण हुई। इस कार्यवाही ने हमारे अफसरों और सैनिकों, विशेषकर उन जनरल अफसरों को, जो 1939-45 के युद्ध में सिर्फ छोटे अफसर ही थे, मूल्यवान प्रशिक्षण और सामरिक अनुभव प्रदान किया। साहस, दृढ़ निश्चय, कुशल कमान और नियंत्रण तथा उत्तम नेतृत्व - ये हमारी सफलता के लिए मुख्यत: जिम्मेदार थे। एक अनुकूल बात यह रही कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उत्तर, पश्चिम सीमा प्रान्त के क्षेत्रों में भारतीय अफसरों ने पर्वतीय युद्ध का अनुभव प्राप्त कर लिया था, जिसका उन्होंने यहाँ उचित इस्तेमाल किया।

एक से अधिक बार यह बात देखी गई है कि किताबी प्रशिक्षण को पर्याप्त स्वोपक्रमता और साधन-सम्पन्नता से पुष्ट करना पड़ता है। अन्तत: भारत के सभी भागों में आए जवानों ने एक उच्च कोटि की राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का परिचय दिया। हमारे इतिहास में इसकी समता कम मिलती है।

भारतीय सेना और युद्धकला प्राचीनकाल से आज तक :
लेखक - कर्नल गौतम शर्मा
प्रकाशक : राजपाल एण्ड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006 - से साभार

लालन साह फकीर के गीत

सुमन साव, एम फिल, कलकत्ता विश्वविद्यालय

लाल शाह या लालन फकीर बंगाल का वह रत्न है। जिन्हें न केवल बंगाल की मिट्टी ने सराहा बल्कि देश भर में इस फकीर की झांकी किसी-न-किसी रूप में दिखाई पड़ती है। बंगाल की संस्कृति, इसकी मिट्टी और लोकसाहित्य में इनके एकतारे ने तान छेड़ी है। लालन शाह और इनके अनुयायी मूल रूप से सदा जीवन व्यतीत करते हैं। गले में तुलसी काठ की माला माथे पर चंदन का तिलक और एकतारे के साथ गेरूआ (केसरिया) रंग का वस्त्र, सहज ही इनके जीवन शैली को आकर्षित करता है। लालन शाह को हम स्वरकार, गीतकार समाज सुधारक के रूप में देख सकते हैं। संगीत जगत में लालन फकीर का स्थान अतुलनीय है। वे जो गीत गाते थे उसका नाम बाउल संगीत है। बाउल संगीत मूलत: भाव और तत्व प्रधान संगीत है। इस संगीत में अपने ही हृदय में अपने अस्तित्व की पहचान करना है। लालन फकीर के हृदय में भी यही भावना विद्यमान रहती है। इस कारण बाउल गीत को भावगीत भी कहा जाता है। लालन शाह फकीर का संगीत सृष्टि का अभिनव संगीत है। इसके स्वर में कोई दीनता नहीं है। एक विशेष शैली में इनके जीत रचे गए हैं। संगीत के सूरों के मध्य एक विशेष वैचित्रता विद्यमान है। इनका संगीत भाव प्रधान अतुलनीय है। इनके गान में एक विह्वलता है जो न केवल गायक के बल्कि श्रोता के हृदय को भी उद्वेलित करती है। इनके गान में तत्वबहुलता है, मूल रूप से देहतत्व और आत्मतत्व विद्यमान है। इसमें स्वर वाणी और भाव का मायाजाल विद्यमान है। बाऊल गान की साधना मनुष्य के हृदय को एकाग्र बनाती है। इनके गाने का भाव तत्व हृदय को मंत्रमुग्ध बनाता है। लालन हृदय के कवि हैं। सीमा और असीम के महामिलन को सर्वत्र उन्होंने स्थान दिया है। एक तरफ वे कवि हैं दूसरे तरफ गायक इस कारण इन्हें कवि गायक भी कहा जाता है। 'बाऊल कविगुरु' के रूप में भी ये प्रतिष्ठित हैं। लालन अपने हाथों से कुछ भी नहीं लिखते थे अपने मुख से वो गान का संयोजन करते थे। उनके अधिकांश गाने को मानिक पण्डित नाम के एक शिष्य ने सुनकर लिखा है। लालन शाह की बांगला साहित्य के गजल गीति के आदिगुरु कहा जा सकता है। रवीन्द्रनाथ ने लालन के व्यक्तित्व का परिचय सुधी समाज से करवाया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लालन शाह के छेउड़िया अखाड़ा से गीतों का पाण्डुलिपि प्राप्त की। इसमें से लगभग 20 गानों को 'प्रवासी' पत्रिका में प्रकाशित करवाया हैं। लालन अरबी और फारसी भाषा के ज्ञाता भी थे। इनके शिष्यों में से दुद्दु शाह (दुद्यमलिक), पाण्चू शाह, शुकुर शाह, शीतल शाह, भोलाइ शाह, मनिरुद्दीन शाह, मानिक शाह और मानिक पण्डित आदि विशेष हैं। लालन शाह अल्लाह को मानने वाले थे । ये अति सदाचारी, स्वल्यभाषी और विनयपूर्ण स्वभाव के थे। भिक्षावृत्ति से वे अपने जीवन का निर्वाह करते थे। लालन शाह के जन्म, मृत्यु और जाति आदि विषयों को लेकर विद्वान में मतभेद पाया जाता है। कोई इन्हें मुसलमान मानते हैं। इनके अनुसार वे जैशोर जिला के झिनाइदह जिला के हरिशपुर ग्राम के एक कृषक के घर जन्म लिये थे। कोई यह मानता है कि लालन हिन्दू संतान थे बाद में इस्लाम ग्रहण किया। कुण्टिया के कुमारखाली ग्राम के पालकी ढोने वाले घर इनका जन्म हुआ था और इनके गुरु का नाम सिराज शाह था। लालन इनका बहुत आदर करते थे। लालन शाह के प्रिय शिष्य दुद्दु शाह कलमी के पाण्डुलिपि के अनुसार 1179 बांग्ला वर्ष के पहला कार्तिक या 1778 अंग्रेजी वर्ष के अनुसार जन्म ग्रहण किया था एवं 1295 बांग्ला वर्ष पहला कार्तिक या 1888 अंग्रेजी वर्ष के अनुसार मृत्यु होती है।

लालन फकीर ने व्यक्ति के हृदय को विविध विचारों का मूल माना है। ईश्वर और आत्मा अमर है। निराकार है वे लिखते हैं-

खांचार भितरे अचिन पाखी
कैमन आसे जाय
धोरते पारले मनो बेडी
दिताम ताहार पाय।

लालन शाह फकीर की सर्वाधिक 852 गानों

को 'लालन समग्र' में संकलित किया गया है और यह दुरूह कार्य संकलित किया गया है और यह दुरूह कर्म रफिकुज्यामान हुमायूं ने किया है। लालन शाह ने व्यक्ति के जीवन में गुरू और प्रेम को महत्वपूर्ण माना है। उनका और बलिदान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बतलाते हैं।

गौर / गउर प्रेमेर करे आशा
देबे जा आमादेर दशा
घर छेड़े जंगले बक्सा
गउर प्रेम एमनी धरम
सिराज साइयेर चरण तुले ये लालन।

ईश्वर भक्ति में वे सदैव प्रेम को सर्वोपरि मानते हैं। उनके अनुसार इस धरा पर ईश्वर एक ही है परन्तु लोगों ने उन्हें विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों में बाँटा है। वे सदैव ईश्वर के एक ही स्वस्थ को मानते हैं।

आरबीहे वाले आल्ला
पारिशिते कय खुदाताला
गॉड बलछे झमुर चेला
भिन्न देशे छिन्न भेवे
मानुषेर सफल सृजन।

लालन फकीर अपने जीवन काल मे सदैव ही गुरु की अराधना करते है। गुरू के बिना व्यक्ति जीवन निरर्थक हैं, वे कहते हैं कि -

समय छाड़िया जानिलाम एखन
गुरू कृपा बिने वृथा ए जीवन
विनय करे पथ फकिर लालन
आर कि आनि पाव अधरा। (31पेजनं)

इन्होंने ईश्वर के निराकार स्वस्थ की व्याख्या की है, इनके अनुसार व्यक्ति आडंबर में न पड़ कर ईश्वर के निराकार स्वस्थ को मानना चाहिए-

''आकार कि निराकार साँइ रव्वाना
आहाद ऊपर आहम्देर विचार हले याय जाना।''

गुरु एवं शिष्य के प्रेम को आकार और साकार से परे वे ईश्वर भक्ति में लीन करते है। अपने गीतों में वे सहज ही जाते हैं–

आकारे भजन साकारे साधन तय
आकार साकार अभेद जानते हम।
भजनेर मूल नर आकार
गुरू शिष्य हय प्रचार
साकार रयते आकारे निर्णय
आकार छाड़ा साकार रूप नाहि रय''

मानव की स्वार्थहीनता, पराधिनता एवं स्वार्थसिद्धि के लिये झटपट अपने स्वरूप को बदलते हुए देखकर लालन स्वत: पुकार उठते हैं-

सृष्टि छेले आपोतत्व आपति फाना
मिछे करि पडाशोना लालन बले जाबे जाना
आपनारे आपति चिनिले।
काजेर बेलाय परशमणि,
आर समय कार चेने ना।

आधुनिक काल में या वर्तमान परिदृश्य में हम यह देख सकते हैं कि साधु और योगी के वेश में बड़े-बड़े राक्षस साधारण लोगों का शोषण करते है। योगी और ढोंगी के रूप में पार्थक्य करते हुए वे कहते हैं-

आजब रंग फकिरि सादा सोहागीती सोंई।
ओ तार चुड़ि साड़ी फकिरि भेद के बुझिबे ताई।
सादा सोहागितिर भावे, प्रकृत हईले हबे
लालन कय मन पाबि तबे, भाव समुद्रे थाई।
लोभे पाप पापे मरण, ता कि जान ना रे मन
सिराज सांई कय लालन एखन मरगे घोर विकारे।

अपने गीतों में वे एक अद्‌भुत चमत्कार को दिखाते हैं। इनकी भाषा, मूल बांग्लादेशी अर्थात् पूर्वी बंगाल की भाषा पश्चिम बंगाल की भाषा, अरबी फारसी के शब्द तथा आदिवासी क्षेत्र के अनेक बोलियों को अपने गीतों में स्थान दिया है। इनके गीतों में व्यंग्य प्रधान तत्व की विद्यमान है। कबीर की तरह ही इनकी उलटबासियों ने एक विशेष गुण एवं एक अद्‌भुत चमत्कार दिखाई पड़ता है।

आजब आयना महल मति गभीरे
सेथाय सन्त विराजे सांईजी मेरे

पुर्वदिके रलवेदी तार उपरे खेलछे ज्योति।

लालन शाह के गीतों में मूल रूप से देशवासियों को भाईचारे, बन्धुत्व, मित्रता एवं परोपकारी भावना को दिखाया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने समाज एवं उसके संकट को लालन ने तुलसी और कबीर के तरह ही भाँपा था और इससे उबरने के लिए उन्होंने बाऊलगीत की रचना की। बांग्ला साहित्य के इतिहास में लालन फकीर का स्थान बहुत ही आदरणीय एवं सम्माहित है। यदि हम हिन्दी साहित्य की बात कहे तो जीवन की नैतिक मूल्य एवं समस्त रूढियों का ध्वंस करने वाले एक मात्र कबीर की याद आती है। कबीर दास ने एक साधक की तरह समाज की सेवा किया। गुरू की महिमा का बखान तो सर्वविदित है -

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।

इसके अतिरिक्त समाज में धर्म सम्प्रदाय भेद ईश्वर एकता तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया गया है। लालन और कबीर का समयकाल में कुछ अन्तर अवश्य है। परन्तु मूलभूत रूप से लालन और कबीर अपने समय और समाज में साम्य गीत होते हैं। वर्तमान परिदृश्य में भी इनके गीत, दोहे, साखी आदि प्रासंगिक हैं। एक स्थान पर लालन ने स्वयं को अर्थात् अपने असितत्व की पीड़ा को कबीर दास के पीड़ा के साथ जोड़ते हुए लिखते है-

आपन मनेर सुने सकलि हय
पिड़ेर पाय पेडार खबर करे दूरे जाय
रामदास रामदास बले से तो मुधिर छेले

जाते से जुला कबीर
उडिशाय ताहार जाहिर
बारो जात तार हाँडिर तुगति गय
ना बुझे घर छेड़े, जंगले बांधे मुड़े
लालन कय रिपू छेड़े थावि कोथाय।

अत: लालन ने समाज में व्याप्त छुआछुत जाति प्रथा, रूढियों एवं आडम्बरों का विरोध अपने रागात्मक बाऊलगीत के माध्यम से किया है। उत्तर आधुनिक दौर में नयी पीढ़ी इनके गीतों को अत्यधिक सराह रही है। आधुनिक म्यूजिक एण्ड साउण्ड कम्पोजिंग के द्वारा बाऊलगीत परम्परा और भी समृद्ध ले रही है।

इस लेख का आधार ग्रन्थ :- लालन समग्र - मोबारंक होसेन खान प्रकाशक : रफिकुज्जामान हुमायूँ, एम.ए. गीतांजलि 38/2, बांग्ला बाजार, ढाका - 1100, प्रकाशन वर्ष - जुलाई - 2007, ISBN - 1984-8687-29-7

हमारी बेबसाइट :

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSC CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
SMS to Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

नाटक संग्रह : कसाई बना बकरा और हमारा समय

समीक्षक-डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह
9831770876

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र को पंचमदेव की संज्ञा दी थी और ऋग्वेदकालीन संवादों को नाट्योत्पत्ति के मूल में देखा गया। पर बदलते समय के साथ आधुनिक युग में नाटकों ने लंबी विकास यात्राएँ तय की एवं जन्मोन्मुखी बना। रंगमंच एवं नाटक को लेकर वाद-विवाद भी हुए और यह शिकायत भी रही है कि नाटक को दर्शक नहीं मिलते। उन्हें लगता है कि नाटक को समाज और दर्शक से नहीं जोड़ा जाएगा तो उसकी सार्थकता खत्म हो जायेगी। नेहरू युग की आजादी के मोहभंग एवं जन आन्दोलन के दबाव के चलते एवं सामाजिक अंतर्विरोधों के कारण रंगमंच समाज एवं जीवन के बुनियादी मुद्दों से जुड़ता रहा। रंगकर्म एक तरफ राजनीतिक कर्म बना तो प्रयोग का माध्यम भी। पर नाटकों का मंचन न हो तो नाटकों का विकास रूक जाता है। अब नाटक कारपोरेट के मुहताज भी बनते जा रहे हैं या सरकारी कृपा दृष्टि के। ऐसे ही उपभोक्ता बाद के दौर में नाटककार शिवेन्द्र मिश्र द्वारा 'कसाई बना नाटक' का प्रथम संस्करण का प्रकाशन 2018 में अयन प्रकाशन 1/20, मुहरौली. नई दिल्ली-11030 द्वारा किया गया है। यह नाटककार का प्रथम नाटक संग्रह है। इस 'कसाई बना नाटक' संग्रह में भिन्न-भिन्न परिवेश एवं प्रवृत्ति के तीन अलग-अलग नाटक संकलित हैं जिनके द्वारा नाटककार दर्शकों को एक अलग तरह से उनके मन के द्वार को झंकृत करने का प्रयास की आकांक्षा रखता है। हम संग्रह का मूल्य 200/- (रूपये दो सौ) रखा गया है।

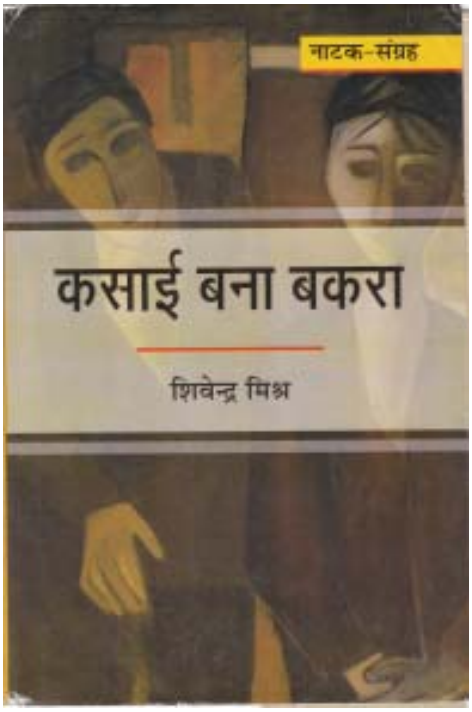

प्रस्तुत नाटक के अनुक्रम एक में 'प्रजातंत्र की वेदना' शीर्षक से एक लघु नाटक है। प्रजातंत्र की वेदना में यह दिखाया गया है कि देश की बहुसंख्यक आबादी भोजन, पानी, शिक्षा, वस्तु, आवास, चिकित्सा, न्याय जैसी बुनियादी समस्याओं में 71 साल के बाद भी पीड़ित है। नाटक का पात्र प्रजातंत्र दास का एहसास है कि वह कफन में लिपटा जिन्दा आदमी है। यह नाटक प्रजातंत्र की विसंगतियों को चित्रित करने के साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत करता है। नाटक यह प्रश्न करता है कि वोटों की ताकत से यह व्यवस्था बदली जा सकती है या नहीं है? क्या सत्य, न्याय, जनहित प्रेमी नेता, इस वोटिंग प्रणाली में जीत सकता है। नाटककार इस यथार्थवादी नाटक के द्वारा अंधी, गुंगी, बहरी व्यवस्था पर प्रश्न उठाता है। ध्वनि एवं मंच संयोजन अच्छा है।

इसका नाटक 'आदर्शों की सीता' है जिसमे सीता की अग्नि परीक्षा को नवीन दृष्टि से देखने का दावा नाटककार करता है। डॉ॰ आनंद कुमार पाठक के अनुसार आदर्शों की सीता नाटक में रचनाकार ने अपने गंभीर चिंतन के पश्चात् एक नवीन प्रकल्पना कर सीता को एक नवीन स्वरूप में प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति एवं समाज में नारी की महत्ता एवं उसकी अंतर्मन की संवेदना को दर्शकों को सरल भाषा में कुशलतापूर्वक समझाने का अद्भुत प्रयास किया है। पर कुल मिलाकर यह नाटक सीता की भावना एवं चिंतन का साधारण दर्शक तक संप्रेषित नहीं कर पाता एवं आधुनिक नारीवादी सोच का अभाव दीखता है।

इस संग्रह का तीसरा नाटक, जो संग्रह का शीर्षक भी है, 'कसाई बना बकरा' नाटककार के नाटकीय प्रतिभा की अन्यतम रचना है। आज चिकित्सकीय सेवा में सेवा का भाव खत्म है और रोगी साधनों तथा चिकित्सा के अभाव में मर जाता है जिसे गोशपपुर के अस्पतालों की घटना में देख सकते हैं। यह नाटक हमारे समय भी अमानवीयता को सामने रखते हुए हमें झकझोर देता है। धरती का भगवान लूट का सौदागर बन गया है एवं जीवन रक्षक, कसाई बन गया है। आदमी बकरे में तब्दील होता जा रहा है एवं डॉक्टर कसाई में। आज चिकित्सा सेवा नहीं धंधा बन गया है। पूरी व्यवस्था हत्यारा बन गयी है। डॉक्टर एवं उसके गुंगे जनता रूपी बकरे की तलाश में है जो रोगी बनकर अस्पताल जाता है।

डॉ॰ शिवेन्द्र मिश्र ने ये नाटक जनधर्म एवं अभिनय योग्य है। नाट्य क्षेत्र में उनकी संभावनाएँ उज्ज्वल है।

काला नहीं देखी तो देख लीजिए

सत्या पटेल की फेसबुक वॉल से

आज फिल्म काला देखी। यह फिल्म देखने से बहुत आसानी से दर्शक को यह समझ में आता है कि तमाम झुग्गी बस्तियों के साथ हमारा सिस्टम क्या कर रहा है। आदिवासी, दलित, किसनों और दबे-कुचले तबकों के साथ कैसे पेश आ रहें हैं।

खेती और बस्ती की जमीन पर फोर लेन, सिक्स लेन और स्पेशल हाइवे किनके लिए बनाए जा रहे हैं। झुग्गी बस्तियों को विस्थापित कर स्मार्ट सिटी, बहु मंजिला पार्किंग और पार्क आदि-आदि किसके लिए बनाए जा रहे हैं।

विकास का सपना, जो दिखाया जा रहा है, उसकी हकीकत क्या है? विकास का सपना देश का सपना है या फिर हरि दादा का सपना है। हरि दादा कौन है? अगर पिछले कुछ साल में हरि दादा को नहीं पहचान पाए हों। तो फिल्म काला जल्दी देख लीजिए। फिर टीवी खोलते ही हरि दादा विकास की बात करते दिखाई देगा। रेडियो चालू कीजिए हरि दादा मन की बात करते सुनाई देगा। गली के हर चौराहे पर देश के हरि दादा, गली के हरि दादा के साथ दिखाई देगा।

फिल्म में हरि दादा की भूमिका में नाना पाटेकर है। जो कि बिल्डर और नेता है। नवभारत राष्ट्रवादी पार्टी का नेता।

मैं आपको फिल्म की कहानी नहीं सुनाना चाहता हूँ। संक्षिप्त में यही कहना चाहता हूँ कि जो गलती पहले कर चुके हो। वह गलती फिर मत दोहराना। हरि दादा और उनके लग्गू-भग्गू के झांसे में मत फँसना। यदि दुबारा यह गलती की तो फिर तुम्हारे आंसू पोंछने वाला कोई नहीं होगा।

असल हरि दादा को पहचानिए। आप जानते ही हैं। लेकिन स्वीकार नहीं करते हैं। क्योंकि हरि दादा डरा रहा है। कभी भारत में रहने वाले अल्पसंख्यकों से, कभी पड़ोसी मुल्क हो। वह आपके डर को अपनी ताकत में बदलना चाहता है। वह आपको राष्ट्रवादी और देशभक्त भक्त बनने के लिए उकसाता है। वह खुद को बहुत बड़ा राष्ट्रवादी और देशभक्त मानता है। मगर देश के संविधान, कानून को नहीं मानता है। किसानों से, बस्ती वालों से जमीन छीन कर धन्ना सेठों को दे रहा है। मुखालिफत करने वाले को देशद्रोही कह मरवा देता है। उससे बचना, वह देश भक्त नहीं, वह राष्ट्रवादी नहीं। असल में देशद्रोहियों का प्रधान है।

एक बार हरि दादा आपके अच्छे-अच्छे सपने दिखाकर ठग चुका है। फिर आपको ठगने की तैयारी जोर-शोर से चल रही है। सतर्क रहने की जरूरत है।

काला वाकई अद्‌भुत फिल्म है। यदि आप फिल्म के शौकीन नहीं है, तब भी देखिए। हरि दादा को भी काला देखनी चाहिए। अनेक अड़ी - सड़ी फिल्म की रिलीज में सेंसर टांग अड़ा देता है। लेकिन यह फिल्म रिलीज हो गयी, यह आश्चर्यजनक है। इस फिल्म का गांव-गांव और बस्ती प्रदर्शन होना चाहिए। काश! यह मेरे बस में होता।

मैं यहाँ काला की तस्वीर लगा रहा हूँ, लेकिन हरि दादा की आप लगाइए। अपनी गली के हरि दादा से लेकर दुनिया के हरि दादा तक की तस्वीर लगा सकते हैं। संभव है कि कुछ की नजर में हरि दादा कामन होगा और कुछ की नजर में अलग-अलग होंगे। इस तरह हम एकाधिक हरि दादा को जान सकेंगे। आप हरि दादा कोई किस्सा भी सुना सकते हैं।

स्व पंडित अम्बू शर्मा की कृतियों के सही मूल्यांकन एवं पुरस्कार शुरु करने का प्रस्ताव

कोलकाता - 11 जून राजस्थानी - हिन्दी विद्वान, साहित्यकार एवं पत्रकार स्व॰ अम्बू शर्मा। (अम्बिका चरण महामिया) की साहित्यिक-सांस्कृतिक कृतियों और प्रतिभा का आकलन व सम्मान करने में समाज विफल रहा है, उनकी सही मूल्यांकन और शर्माजी की लुप्त हो चुकी पुस्तकों का पुन:प्रकाशन एवं पांडुलिपियों का मुद्रण समय की महत्ती मांग है जो इस सारस्वत पंडित को सही श्रद्धांजलि होगी, पं॰ अम्बू शर्मा की सार्वजनिक श्रद्धार्ध्य अर्पित करने के लिए रविवार को हुई कोलकाता की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक-साहित्यिक संस्थाओं की संयुक्त श्रद्धांजलि-सभा में विशिष्ट जनों ने यह मत व्यक्त किया।

वयोवृद्ध संपादक श्री गीतेश शर्मा ने पं॰ अम्बू शर्मा जैसी मौलिक प्रतिभाओं की अनदेखी पर खेद व्यक्त करते हुए कहा कि अम्बूजी की विलक्षण रचना धर्मिता और उनकी कृतियों का यथोचित सम्मान समाज उनके जीवन-काल में नहीं कर पाया, जाने के बाद पं॰ अम्बू शर्मा के नाम से एक भाषा-साहित्य पुरस्कार तो स्थापित कर ही सकता है, राष्ट्रीय पहचान होने के नाते उन्होंने भारतीय भाषा परिषद को यह बीड़ा उठाने का प्रस्ताव रखा सभा संचालक नन्दलाल शाह ने परिषद के मंत्री के नाते इस पर यथोचित विचार का वचन दिया, बाद में अध्यक्षीय अभिभाषण में भी घनश्याम शाह ने पुरष्कार की स्थापना में पूर्ण सहयोग हेतु सभाजनों को आश्वस्त किया। इससे पहले वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक व्यक्तित्व बिश्वम्भर नेवर ने भाषा-संस्कृति के इस विलोपन काल में पं॰ अम्बू शर्मा जैसे भाषा कर्मी-विद्वानों के चले जाने पर चिंता व्यक्त की ओर अम्बूजी को सरल-मना मनीषी करार दिया।

कोलकाता में राजस्थानी प्रचारिणी सभा की स्थापना में पं॰ अम्बू शर्मा के साथी व राजस्थानी पत्र 'लाडेसर' के प्रकाशक रहे रतन साह ने कहा कि अम्बूजी की लेखन प्रतिभा का सानी नहीं है, उन्होंने बहुचर्चित रामायण तथा कृष्णायन जैसे अत्यंत मौलिक काव्य ग्रन्थों के साथ अन्य कई गद्य-पद्य पुस्तकों का सृजन भी किया जिनमें गीतिकाव्य, यीशु हजारों और विष्णु-सहश्रनाम जैसी कृतियां है, पं॰ अम्बू शर्मा के पुत्र श्री महमिया अजय ने यह तथ्य स्पष्ट करके के लिए नन्दलालजी शाह का धन्यवाद किया कि अम्बू - रामायण तुलसी अथवा किसी अन्य रामायण का काव्य अनुवाद नहीं अपितु पूर्णत: स्वतंत्र और मौलिक कृति है उन्होंने बताया कि निधन से पहले बीमारी के बीच बाबूजी खंडकाव्य ''अम्बू परमहंसायण'' की रचना पूरी करने में सफल रहे, श्री रामकृष्ण परमहंस की जीवनी पर आधारित इस रचना पर अम्बूजी पिछले तीन वर्षो से कार्य कर रहे थे, श्री महमिया ने इस पाण्डुलिपि का अंश-पाठ भी किया, वरिष्ठ टी.वी. पत्रकार और प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री स्नेहाशीष सूर ने आह्वान किया कि अम्बूजी की विलक्षण लेखन प्रतिभा से अन्य भाषा के आम पाठकों को परिचित करान के लिए उनकी रचनाओं का बांग्ला में भी अनुवाद एवं प्रकाशन किया जाये, डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने शोक प्रस्ताव का पाठ किया परिषद् की अध्यक्षता डॉ कुसुम खेमानी, श्री प्रमोद साह, श्री बजरंग लाल तुलस्यान, श्री बंशीधर शर्मा, श्री महाबीर बजाज ने भी अपने श्रद्धांजलि-मूलक संस्मरण प्रस्तुत कर पं॰ अम्बू शर्मा को श्रद्धांजलि दी। इस श्रद्धांजलि सभा का आयोजन भाषा परिषद्, सदीनामा, रजस्थान परिषद, संस्कृति सौरभ, मारवाड़ी युवा मंच, झुंझनू प्रगति संघ, बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय आदि संगठनों ने परिषद् सभागार में किया।

प्रकाशन प्रभार

•राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया

• मारिया शमीम • रमेश कुमार कुम्हार

श्री पी. के. श्रीवास्तव आयुध निर्माणी बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त

श्री पी. के. श्रीवास्तव ने 1 जुलाई, 2018 से आयुध निर्माणी महानिदेशक तथा आयुध निर्माणी बोर्ड अध्यक्ष का पद-भार ग्रहण किया है। इससे पहले वे अवाड़ी, चैन्नै स्थित आर्मर्ड वेहिकल्स मुख्यालय के अधिशासी अधिकारी, आयुध निर्माणी बोर्ड के सदस्य और आयुध निर्माणियों के अपर महानिदेशक थे।

सन् 1982 में आयुध निर्माणी सेवा में पदस्थापित होने के बाद श्रीयुत् श्रीवास्तव ने विभिन्न प्रतिरक्षा उत्पादन संस्थानों में 36 वर्षों तक कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सम्भाली है। वे 'टोटल क्वालिटी मैनेजमेण्ट' नामक पुस्तक के लेखक भी हैं।

यह जानकारी हमें pib.calcutta.gmail.com से मिली। जिसका संदर्भ mhamiaac@yahoo.com है।

-मिनाक्षी सांगानेरिया

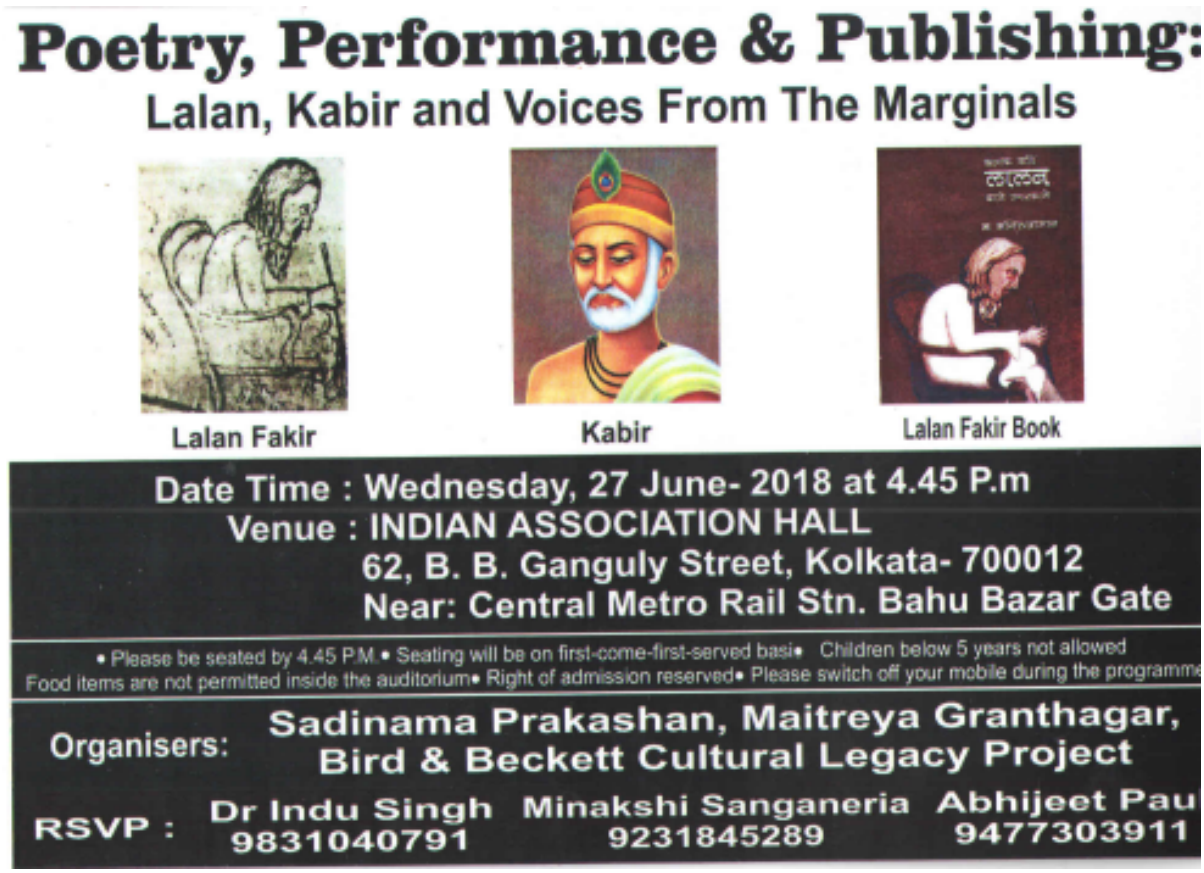

फक्कड़ कवि कबीर और फकीर लालन का संगम गत सप्ताह को भारत सभा हॉल, कोलकाता में सदीनामा प्रकाशन, मैत्रेयी ग्रंथागार एवं बर्ड एण्ड ब्रेकेड कल्चरल लेजेसी प्रोजेक्ट द्वारा 'Poetry, Performance & Publishing, Lalan Kabir & Voices from the Marginals. कार्यक्रम आयोजित किया गया जो कोलकाता के लोगों को पहली बार भोजपुरी, हिन्दी के कवि कबीर और बांग्ला में कवि लालन फकीर के बारे में एक साथ सुनने का मौका मिला जिन्होंने कविगुरु टैगोर और नजरूल को भी प्रभावित किया था। हिंदी जगत के सामने सदीनामा के संपादक जितेन्द्र जितांशु ने स्व॰ मो॰ मनिरूज्जमान की लिखी पुस्तक ''साधक कवि लालन काल उत्तरकाल में'' का अनुवाद कराने के साथ उसी पुस्तक का संपादन संयोजन कर हिन्दी जगत के सामने सहजिया परंपरा, प्रेम और विद्रोह के गायक तथा कट्टरता पर प्रहार करने वाले साधक कवि लालन ने परिचित कराने का प्रयास कराया है। इस कार्यक्रम में बांग्लादेशी लेखिका एवं स्व॰ मो॰ मनिरूज्जमान का बीबी आलम आरा जुई की भास्वर उपस्थिति महत्वपूर्ण थी।

कार्यक्रम की शुरुआत मरजीना खातुन के बाँसुरी वादन से हुई जिन्हें मैडम रूखसाना द्वारा सम्मानित किया गया। फरीदा खातुन ने लालन एवं कबीर का तुलनात्मक विवेचन किया जिनको महेश जायसवाल द्वारा सम्मानित किया गया। सुमन साव को आलेख पाठ के लिए भूपेन्द्र सिंह बशर द्वारा सम्मानित किया गया एवं लालन गीत प्रस्तुति के लिए आयेशा खातुन को रणविजय कुमार श्रीवास्तव द्वारा सम्मानित किया गया। कबीर लालन के विभिन्न आलोचनात्मक पक्षों को समेटने वाले पप्पू रजक के आलेख पाठ के बाद सीताराम अग्रवाल सम्मानित किया गया। मधुमिता सरकार ने मोहक अंदाज में लालन के गीतों को प्रस्तुत किया जिनको डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह

अविभाजित भारतवर्ष के बांग्ला भाषा के कबीर लालन फकीर पर पुस्तक का लोकार्पण

द्वारा सम्मानित किया गया। मेरुना मुर्मु ने लालन गीती का गायन सुन्दर था जिनको डॉ॰ अभिजित पाल द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पप्पू रजक द्वारा डॉ॰ सूर्यदेव शास्त्री एवं गोपाल प्रसाद साव की कविताओं की आवृत्ति और वाचन किया गया।

डॉ॰ इंदु सिंह की कविता विक्रम साव ने सुनाई। भूपेन्द्र सिंह बशर ने गुरुग्रंथ साहिब और कबीर का विवेचन किया।

बांग्लादेश की प्रख्यात लेखिका आलम आरा जुँई को सुलोचना सारस्वत और अनीता राय द्वारा सम्मानित किया गया। आलम आरा ने साधक लालन संबंधित अनुदित तथा संपादित पुस्तक से जुड़े सभी लोगों जितेन्द्र जितांशु, रावेल पुष्प, डॉ. कमलेश जैन, राजेश्वर राय, नवीन प्रजापति 'स्वान्त', कल्याणी ठाकुर, मीनाक्षी सांगानेरिया आदि को सम्मानित किया गया ।

डॉ॰ सत्या उपाध्याय, प्रिंसिपल, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, भारत में लालन फकीर के वंशज, श्यामल मजूमदार तथा डॉ॰ संजय जायसवाल, प्रिन्सिपल, लाल बाबा कॉलेज ने पुस्तक का लोकार्पण किया।

इसके अलावा लालन विद्वन्तजनों सर्वश्री जतीन्द्र नाथ राय, श्यामल भट्टाचार्य, नव गोपाल राय, करुणा प्रसाद दे तथा अमेरिका से आयी रेबेका को भी सम्मान प्रदान किया गया।

लालन गीत की अन्तिम प्रस्तुति गायक दीपमय दास ने की ।

कार्यक्रम का अंत डॉ॰ अभिजित पाल के धन्यवाद भाषण से हुआ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विश्वजीत शर्मा, डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह, वेदान्त सांगानेरिया सहित खचाखच भरे हाल में सभी अतिथियों उपस्थित श्रोताओं की भागीदारी महत्वपूर्ण रही। यह रपट डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह ने लिखी।

कार्यक्रम की झलकियाँ अगले पन्नों पर

परिवार के किसी भी सदस्य के
अस्वाभाविक व्यवहार / आदत को गंभीरता से ले
सदीनामा को फोन करें।
(अपनी सदस्यता संख्या बताते हुए सम्पर्क करें)

Mobile : 9051525679

E-mail : sadinama2000@gmail.com

सदस्यता के लिए 9231845289

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और बुरी आदतों से मुक्ति के लिए सदीनामा की पहल

17:54 27.06.18

Poetry, Performances & Publishing
19:07 27.06.18

19:28 27.06.18

19:55 27.06.18

ISSN : 2454-2121
R.N. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regd. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 जुलाई
कुल पेज : 28

मूल्य : 10.00

सदीनामा

E-mail : jjitanshu@yahoo.com

हमारी बेबसाइट :

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213

PUNJAB AND SIND BANK

IFSC CODE : PSIB0000377

Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)

SMS to Inform - 09231845289

PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

With best compliments from :

GOLDEN
Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

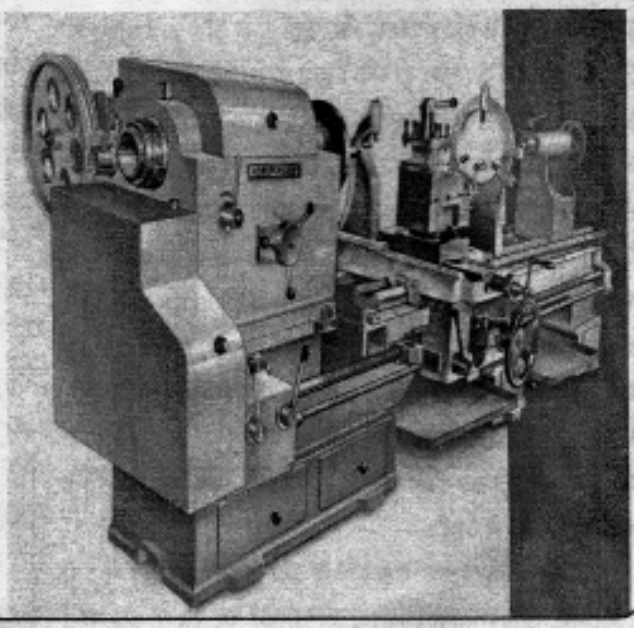

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी पुष्पमित्र शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा
H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), **Kolkata-700137, 24Pgs(S). W.B. India** प्रकाशित।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, 9231845289, **E-mail : jjitanshu@yahoo.co.in R.N.1 No. WBHIN/2000/1974**